अथ श्री आवश्यक सूत्र-भाग २रा

(साधु प्रतिक्रमण) प्रारंभ.

अमदावाद
टंकशाळमां—धी युनीयन प्रीन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेडमें
मोतीलाल शामळदासने छापा

॥ श्री आवश्यक सूत्र-भाग २ रा ॥

(साधु प्रतिक्रमण)

"ज्ञानशिक्षा" नामक भाषा टीका समेत ॥

अनुवादक—उपाध्याय श्री जैन मुनि आत्मारामजी (पंजाबी)

प्रकाशकौ-लाला जातीराम सावनमल ओसवाल जैन
और जैन युवक मंडल
बाजार पसारिया—लुधियाना (पंजाब)

प्रथमावृत्ति-प्रत २५० ॥ वीर संवत २४४३ ॥

यह पुस्तक मिलनेका पत्ता—

लाला जातीराम सावनमल ओसवाल जैन.

बाजार पंसारिया,—लुधियाना (पंजाब)

ॐ

॥ श्री आवश्यक सूत्रम् ॥

॥ साधु प्रतिक्रमणम् ॥

(हिंदी पदार्थ तथा भावार्थ सहितम्)

॥ द्वितीय भागः ॥

सामायिककी आज्ञा लेनेसे पूर्व गुरुको "तिक्खुत्तो" के पाठसे तीन वार वन्दना नमस्कार करे जिसका निम्न लिखितानुसार पाठ है ॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिण करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥

---

१ चिती सज्ञाने धातुसे घमन्त चेत शब्द सिद्ध करके फिर तद्धितका ष्य प्रत्यय लगाकर चैत्य शब्द बन जाता है, और प्राकृतमें चेइय ऐसा रूप होता है, किन्तु चेइय शब्द द्वितीयाका एक वचन ही है ॥

हिंदी पदार्थ—(तिक्खुत्तो) तीन वार (आयाहिणं) गुरु महाराजजीके दक्षिण पासेसे लेकर (पयाहिण) प्रदक्षिणा (करेमि) करता हूं (वंदामि) स्तुति करता हूं (नमंसामि) नमस्कार करता हूं (सक्कारेमि) सत्कार करता हू (सम्माणेमि) सन्मान देता हूं। गुरुदेव कैसे है (कल्लाणं) कल्याणकारी (मंगलं) मंगलकारी (देवय) धर्मदेव (चेइयं) ज्ञानवन्त, यह चारों ही नाम गुरु महाराजके है सो मैं (पज्जुवासामि) ऐसे गुरु महाराजकी मन वचन काया करके सेवा करता हू, और (मत्थएण) मस्तक करके (वंदामि) वन्दना करता हूं ॥

भावार्थ—उक्त मूल सूत्रमें यह वर्णन है कि गुरु महाराजके दक्षिणकी ओरसे लेकर तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करे और गुरु महाराजको सन्मानादि भली प्रकार देवे, मस्तक नमाकर वन्दना करे, किन्तु (तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिण) यह दो सूत्र वन्दनाकी विधि विधान कर्ते है, अपितु (करेमि) जो कि संस्कृत भाषामें करोमि शब्द उत्तम पुरुषका एक वचन है वहामे ही वन्दना करनेका मूल सूत्र जानना ॥

फिर इच्छाकारेणका पाठ पढ़े ॥

मूल सूत्रम् ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरिया वहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छा-

मि पडिक्कम्मिउं इरिया वहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे उसाउतिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संत्ताणा संक्कमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइदिया तेइदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अहिभया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणा उठाणं सकामिया जोवियाउ ववरोविया जो मे देवासि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इसका अर्थ आगे लिखेंगे ॥ फिर तस्सोत्तरी करनेका पाठ पढ़े ।

मूल सूत्रम् ॥

तस्स उत्तरी करणेण पायच्छित्त करणेणं विसोहि करणेणं विसल्ली करणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायण ठाए ठामि काउसग्गं अन्नत्थ उसस्सिएणं निसस्सिएणं खासिएण छीएणं जंभाइएण उड्डुएणं वाय निसग्गेण भमलिए पित्त मुच्छाए सुहुमेहिं अगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहु-

मेहिं दिठीसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिउ हुज्ज मे काउसग्गं जाव अरिहंताणं भगवन्ताणं नमोक्कारेण न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेण झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ–(तस्स) उस आत्माकी शुद्धिके लिए (उत्तरी करणेणं) प्रधान जो कृत्य है उनको उत्तरी करण कहते है, फिर (पायच्छित करणेणं) शुद्धिरूप जो पापके प्रायश्चित हैं वह (विसोहि करणेणं) आत्माको विशुद्ध करनेवाले है, पुनः (विसल्ली करणेणं) शल्योंके दूर करने वाला है अर्थात् जो आत्मामें मायादि शल्य है उन शल्योंको दूर करनेके वास्ते, और (पावाणं) पापकर्मके (निग्घायण ठाए) नाश करनेके वास्ते (ठामि) एक स्थानमें (काउसग्गं) कायोत्सर्ग करता हू अर्थात् पापकर्मके काटनेके लिए एक स्थान पर स्थित होकर ध्यान करता हूं किन्तु (अन्नत्थ) इतने विशेष जो आगार आगे कहे जाते है इनके विना कायाको हिलाऊंगा नहीं अर्थात् कायाका व्यापार इनके विना न करूंगा, सो यह भी आगार अपने वशके नहीं है–जैसे कि–(उसस्सिएणं) ऊचे श्वासके आने पर अथवा (निसस्सिएणं) नीचे श्वासके होने पर वा (खासिएणं) खासी (छीएण) छीक (जंभाइएणं) जंभाई उवासी (उड्डुएणं) डकार

(वायनिसग्गेण) अधो वायुके निकलने पर (भमलिए) चक्रके होने पर (पित्तमुच्छाए) पित्त उच्छलने पर (सुहुमेहिं अगमचालेहिं) सूक्ष्म अगके सचालन होने पर (सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं) सूक्ष्म श्लेष्मण [कफ] के सचालन होने पर (सुहुमेहिं दिट्ठीसचालेहिं) सूक्ष्म दृष्टिके चलने पर (एवमाइएहिं) इत्यादि अन्य कई (आगारेहिं) आकारोसे यदि मेरा शरीर ध्यानावस्थामें कपायमान हो जावे तो मेरा ध्यान (अभग्गो) भंग न होगा अर्थात् खंडित न होगा (अविराहिउ) विराधित न होगा, इन प्रतिज्ञायें करके (हुज्ज) होवे (मे) मेरा (काउसग्गो) कायोत्सर्ग अर्थात् कायाका स्थिर रूप ध्यान, सो यह ध्यान कब तक (जाव) यावत्काल मैं (अरिहंताण) श्री अरिहंतोंको (भगवताणं) भगवतोंको (नमोक्कारेणं) नमस्कार न करूं अर्थात् नमो अरिहंताणं भगवंताणं न कहूं तावत् काल (न पारेमि) न पारूं अर्थात् ध्यानको संपूर्ण न करूं अपितु (ताव) तावत् काल पर्यन्त (कायं) कायाको (ठाणेण) एक स्थानमें रक्खू पुनः (मोणेण) मौन वृत्तिमें तथा (झाणेण) एकाग्र ध्यान वृतिमे (अप्पाण) अपनी कायाको, वा अपनी आत्मासे पाप कर्मको (वोसिरामि) व्युत्सृजामि–छोड़ता हूं वा त्यागता हूं ॥

भावार्थ–उक्त सूत्रमें यह विधान है कि मुनि पापकर्मका नाश करनेके लिये ध्यान करे और जो प्रतिज्ञायें सूत्रमें वर्णन की गई है उनके विना ध्यानमें कायाको सचालन न करे। पुनः

ध्यानका नियम यावत् काल नमो अरिहंताणं ऐसा शब्द न पढ़े तावत् काल ध्यान ही रक्खे। यह सर्व उक्त सूत्रमें आत्माकी शुद्धिके लिए ध्यान विधि निरूपण की गई है, अपितु ध्यानमें निम्न लिखित एक लोगस्स उज्जोयगरेका पाठ पढ़े ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजियं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च, विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च, वंदामि अरिठ्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ विहुय रयमला पहीण जरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा-सिद्धा, आरोग्ग वोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवर गंभीरा सिद्धासिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

हिंदी पदार्थ–(लोगस्स) लोकमें (उज्जोयगरे) उजाला करनेवाले और (धम्मतित्थयरे) धर्म रूपी तीर्थके स्थापन करनेवाले पुनः (जिणे) राग द्वेषके जीतनेवाले (अरिहंते) ऐसे जो श्री अरिहत है (कित्तइस्सं) तिनकी स्तुति करता हूं (चउवीसंपि) और ऋषभादि चतुर्विंशति तीर्थकरोंके नाम लेकर स्तुति करता हूं। अपि शब्दसे अन्य जिनेन्द्रोंका भी ग्रहण करना ॥१॥ पुनः २४ तीर्थकर कैसे है (केवली) केवल ज्ञानके धारक है। अथ चतुर्विंशति तीर्थकर नामानि (उसभं) ऋषभदेवजीको (अजियं च) पुनः अजितनाथजी को (वंदे) वंदना करता हू (सभव) सभवनाथजी को (अभिणंदण) अभिनदननाथजीको (च) और (सुमइ) सुमतिनाथजीको (च) पुनः (पउमप्पहं) श्री पद्मप्रभु स्वामीजीको (सुपास) श्री सुपार्श्वनाथजी को (जिण) रागद्वेपके जीतनेवालेको (च) और (चदप्पहं) चंद्रप्रभजीको (वदे) वदना करता हू ॥ २ ॥ (सुविहिं) सुविधिनाथजीको (च) पुनः इनका द्वितीय नाम (पुप्फदंत) पुप्पदंतजी को (सीअल) शीतलनाथजीको (सिज्जस) श्रेयासनाथजीको (वासुपुज्ज) वासुपूज्य स्वामीजीको (च) और (विमल) विमलनाथजीको (अणतं) अनंतनाथजीको (च) और (जिण) रागद्वेपके जीतने वाले (धम्म) धर्मनाथजीको (च) पुनः (संति) शान्तिनाथजीको (वदामि) वंदना करता हूं ॥ ३ ॥ (कुंथुं) कुथुनाथजी को (अरं) अरनाथजीको (च) और

ध्यानका नियम यावत् काल नमो आरिहंताणं ऐसा शब्द न पढ़े तावत् काल ध्यान ही रक्खे। यह सर्व उक्त सूत्रमें आत्माकी शुद्धिके लिए ध्यान विधि निरूपण की गई है, आपितु ध्यानमें निम्न लिखित एक लोगस्स उज्जोयगरेका पाठ पढ़े ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजियं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत्तं सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च, विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च, वंदामि अरिठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ विहुय रयमला पहीण जरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा-सिद्धा, आरोग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवर गंभीरा सिद्धासिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

हिंदी पदार्थ—(लोगस्स) लोकमें (उज्जोयगरे) उजाला करनेवाले और (धम्मतित्थयरे) धर्म रूपी तीर्थके स्थापन करनेवाले पुनः (जिणे) राग द्वेषके जीतनेवाले (अरिहंते) ऐसे जो श्री अरिहत है (कित्तइस्सं) तिनकी स्तुति करता हूं (चउवींसंपि) और ऋषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरोंके नाम लेकर स्तुति करता हूं। अपि शब्दसे अन्य जिनेन्द्रोंका भी ग्रहण करना ॥१॥ पुनः २४ तीर्थंकर कैसे है (केवली) केवल ज्ञानके धारक है। अथ चतुर्विंशति तीर्थंकर नामानि (उसभं) ऋषभदेवजीको (अजियं च) पुनः अजितनाथजी को (वंदे) वंदना करता हू (संभव) संभवनाथजी को (अभिणंदण) अभिनंदननाथजीको (च) और (सुमइ) सुमतिनाथजीको (च) पुनः (पउमप्पह) श्री पद्मप्रभु स्वामीजीको (सुपास) श्री सुपार्श्वनाथजी को (जिण) रागद्वेषके जीतनेवालेको (च) और (चंदप्पहं) चंद्रप्रभजीको (वंदे) वंदना करता हू ॥ २ ॥ (सुविहिं) सुविधिनाथजीको (च) पुनः इनका द्वितीय नाम (पुप्फदंत) पुष्पदंतजी को (सीअल) शीतलनाथजीको (सिज्जंस) श्रेयांसनाथजीको (वासुपुज्ज) वासुपूज्य स्वामीजीको (च) ओर (विमल) विमलनाथजीको (अणंत) अनंतनाथजीको (च) और (जिण) रागद्वेषके जीतने वाले (धम्म) धर्मनाथजीको (च) पुनः (संति) शान्तिनाथजीको (वंदामि) वंदना करता हूं ॥ ३ ॥ (कुंथु) कुंथुनाथजी को (अरं) अरनाथजीको (च) और

(मल्लिं) मल्लिनाथजीको (वंदे) वंदना करता हूं (मुणिसुव्वय) मुनिसुव्रतस्वामीको (नमिजिणं) नमिनाथजीको रागद्वेषके जीतनेवाले (च) और (वंदामि) वंदना करता हूं (अरिट्ठनेमिं) अरिष्टनेमिजीको (पासं) पार्श्वनाथजीको (तह) तथा (वद्धमाणं) वर्द्धमान स्वामीजीको [श्री महावीरजीको] वंदना करता हूं (च) पादपूरणार्थ है ॥४॥ (एवं) इस प्रकारसे (मए) मैंने (अभिथुआ) अरिहंतोंकी स्तुति की है—क्योंकि—अरिहंत कैसे हैं (विहुय) जिन्होंने दूर करी है (रयमला) कर्मोंकी रज तथा मल फिर (पहीण) क्षय किया है (जरमरणा) जरा और मृत्यु ऐसे जो (चउवीसंपि) चतुर्विंशति तीर्थंकर हैं वा अन्य केवली भगवान् है वे सर्व (जिणवरा) जिनवरा (तित्थयरा) वा सर्व तीर्थंकर देव (मे) मेरे ऊपर (पसीयंतु) प्रसन्न होवें, ये सर्व व्यवहार नयके मतसे प्रार्थना रूप वचन है ॥ ५ ॥ (कित्तिय) कीर्तित (वंदिय) वंदित (महिया) पूज्य है, सो इस स्थानमें भावपूजाका ही विधान है (जे) जो (ए) यह प्रत्यक्ष (लोगस्स) लोकमें (उत्तमा) उत्तम (सिद्धा) सिद्ध है सो मुझको (आरोग्ग) रोगरहित निर्मल ऐसा जो सिद्ध भाव है वा (बोहिलाभ) बोधबीज सम्यक्त्वका लाभ है और (उत्तमं) उत्तम (समाहि) समाधि (वर) जो प्रधान है सो मुझको (दिंतु) देवें ॥ ६ ॥ क्योंकि आप कैसे है (चंदेसु[1])

१ पंचम्यर्थे सप्तमी विभक्ति सूत्रमें दी है ॥

चन्द्रयासे (निम्मलयरा) अधिक निर्मल ओर (आइच्चेसु) सूर्यसे भी (अहिय) अत्यंत (पयासयरा) प्रकाश करनेवाले भी (सागरवर) प्रधान सागर जो कि स्वयंभू रमण समुद्र है उसके समान (गभीरा) गुणोंमें गम्भीर है (सिद्धा) कार्य सिद्ध हुए हैं जिनके ऐसे श्री सिद्ध प्रभु हैं सो ऐसे सिद्धो (सिद्धि) मुक्ति जो है सो (मम) मेरे को (दिसंतु) देवें ॥ ७ ॥

भावार्थ—इस सूत्रमें जो सम्यक्त्वकी विशुद्धिके लिए पाठ है उनका साधु ध्यान करे जैसे कि—२४ तीर्थंकरोंके नाम है, फिर उनके गुणोंका यथाशक्ति अनुकरण भी करे क्योंकि ध्यानमें मुख्यतया समाधिकी ही आवश्यकता है। जो प्रार्थनाके पाठ हैं वह भी इस प्रकारसे हैं जो शीघ्र ही आत्मबोधको दिखलाते है जैसे कि—(जिन) ध्यान करते २ वर्ण विपर्यय करने से (निज) ध्यान हो जाता है, इसी प्रकार ध्यानमें भी प्रार्थना आत्मसमाधिको ही पुष्ट करती है—अर्थात् प्रार्थना इस प्रकारसे समाधि देती है जैसे चिंतामणि रत्न इच्छुककी इच्छा पूरी कर देता है। सो इस सूत्रका ध्यान करके फिर नमो अरिहंताण ऐसे पाठ पढके फिर वही पाठ एक वार ऊंचे स्वरसे पढे ॥

फिर बैठकर दक्षिण जानु भूमिका पर रखकर वामा जानु ऊंचा करके पुनः हाथ जोड़ कर दो वार निम्न लिखित सूत्र पढे ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीयाणं पुरिसवर गंधहत्थीणं लो-गुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभय-दयाणं चक्खुदयाण मग्गदयाण सरणदयाणं जीवदयाण वोहिदयाणं धम्म-दयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर चाउरंत चक्कव टीणं दीवोत्ताणं सरणगई पइठाणं अप्पडिहय वरनाणंदसणधराणं विअट्ट छउमाणं जिण्णाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं वोहियाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णुणं सव्वदरिसिणं सिव मयल मरुय मणंत मक्खय मव्वा-वाह मपुणराविति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिय-भयाणं ॥

हिंदी पदार्थ—(नमोत्थुणं) नमोस्तु अर्थात् नमस्कार हो णं इति वाक्योपन्यासे (अरिहंताणं) श्री अरिहंतोंको इसी प्रकार सर्वत्र जानना (भगवताणं) भगवंतोंको (आइग-

राण) धर्मकी आदि करनेवालोंको (तित्थयगराण) चतुर् श्री संघरूप तीर्थस्थापकोंको फिर जिनको (सय संबुद्धाण) स्वयमेव बोध हुआ है फिर (पुरिसुत्तमाणं) पुरुषोत्तमोंको (पुरिससीहाणं) पुरुषोंमें सिंह समान बलापेक्षा करके (पुरिसवर पुडरीयाण) पुरुषोमे पुडरीक समान निर्लेप (पुरिसवर) पुरुषोमे प्रधान (गंधहत्थीणं) गंधहस्ती समान (लोगुत्तमाणं) लोकमें उत्तम (लोगनाहाण) लोकके नाथ (लोगहियाण) लोकके हितैषी (लोगपईवाणं) लोकमें प्रदीप समान (लोगपज्जोयगराणं) लोकमें परम प्रकाश उजाला करनेवाले (अभयदयाण) अभयदानके देनेवाले (चक्खुदयाण) ज्ञानरूपी नेत्रोंके देनेवाले (मग्गदयाणं) मोक्ष मार्गके बतलानेवाले (सरणदयाण) सर्व जीवोंके आश्रय रूप (जीवदयाणं) संयम रूपी जीवनके दाता (बोहिदयाणं) बोध बीजको देनेवाले (धम्मदयाण) धर्मके देनेवाले (धम्म देसियाण) धर्मका उपदेश करनेवाले (धम्मनायगाण) धर्मके नायक—अर्थात् धर्मके नेता (धम्मसारहीण) धर्म रूप रथके सारथी (धम्मवर चाउरंत) धर्ममें प्रधान चार गतिके अंतर करनेवाले अर्थात् अपनी आतमाको चार गतिसे पृथक् करनेवाले (चक्कवट्टीणं) चक्रवर्ती समान (दीवो ताणं) संसार रूपी समुद्रमें द्वीप समान (सरणगइ पइठाणं) शरण गतोंकी वत्सलता करनेवाले (अप्पडिहय) अप्रतिहत ऐसे (वर) प्रधान (नाणं) ज्ञान (दंसण) दर्शनके (धराण) धरनेवाले (विअट्ट) दूर हो गया है जिनका (छउमाण) छद्मस्थ भाव अर्थात्

कर्म नष्ट हो गये हैं (जिर्ण्णाणं) और फिर जिन्होंने राग द्वेपको जीत लिया है (जावयाणं) औरोंको राग द्वेपके जीतनेका उपदेश करते है-फिर (तिन्नाण) संसार रूपी सागरसे आप तरे है (तारयाण) औरोको तारते है (बुद्धाणं) आप बुद्ध है (वोहियाण) औरोंको वोध देते है फिर (मुत्ताणं) आप कर्मोंसे मुक्त हुए है औरोंको (मोयगाण) कर्मोंसे मुक्त करते है फिर (सवण्णुणं) सर्वज्ञ है (सवदरिसिणं) सर्वदर्शी है फिर (सिव) कल्याण रूप (मयल) अचल (मरूय) रोगरहित (मणंत) अनंत ज्ञानादि युक्त (अक्खयं) अक्षय रूप (अवावाहं) वाधा पीडादि रहित अर्थात् दुःखादि रहित (अपुणरावित्ति) जिनकी अपुनरावृत्ति है अर्थात् पुनर्जन्म नहीं है ऐसी जो सिद्ध गति है (सिद्धिगइ) अर्थात् मोक्ष (नामधेयं) है नाम जिसका ऐसे (ठाणं) स्थानकको (सपत्ताणं) जो संमाप्त हुए है अर्थात् जो मोक्षको माप्त हुए है ऐसे जो श्री अरिहंत प्रभु है तिनको (नमो) नमस्कार हो (जिणाणं) जिन्होने कर्म रूपी शत्रुओंको जीता है फिर (जियभयाण) जिन्होंने सर्व भयोंको जीन लिया है ॥

भावार्थ—इस स्तुति मंगलके द्वितीय वारमें यह पाठ पढना चाहिये (ठाणं संपात्तिउ कामस्स नमोजिणाणं जियभयाणं) और इस स्तवमें जो आत्मा मोक्ष हो गये है वा होनेवाले है उनकी स्तुति है ॥

फिर उनके गुणोंका पुनि यथाशक्ति अनुकरण करे, क्यों कि-स्तुति करनेका साराश यही होता है कि वे गुण स्वयं भी ग्रहण किये जाएँ। जिस प्रकार राग द्वेषादि अंतरग शत्रुओंको जीतके अर्हन् हुए है उसी प्रकार सर्व प्राणियोंको भव्य रूप होना योग्य है क्योंकि पूर्ण शान्ति-का ही नाम सामायिक है ॥

इसके अनतर गुरु महाराजको तीन वार, 'तिक्खुत्तो' के पाठसे वन्दना नमस्कार करके सामायिक आवश्यक करनेकी आज्ञा लेकर निम्न लिखित सूत्र पढ़े—

आवस्सेही इच्छाकारेण सदिसह भगवन् देवसि पडिक्कमणो ठायमि देवसि ज्ञान दसण चरित्त तप अतिचार चिंत्वना अर्थ करेमि कउसग्गं ॥१॥

इसके पश्चात् निम्न लिखित पाठ पढे—

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाण णमो उवज्झायाणं णमो लोए सवसाहूण ॥ २ ॥

---

१ अर्थ—हे भगवन्! मैं अवश्य ही करने योग्य कर्मकी इच्छा करता हू। आपकी आज्ञाके साथ दिवस सम्बन्धि प्रतिक्रमणके लिए उद्यत होता हू। दिनमे जो ज्ञान दर्शन चारित्र और तपमे अतिचार लगे हैं उनकी चिंत्वनाके वास्ते कायोत्सर्ग करता हू २ इन पाठोंका अर्थ आगे लिखा जायगा ॥

पुनः—

करेमि भंते सामाइयं सव्वं सावज्जजोगं पच्चक्खामि जावजीवाय तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए कायेणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्ने न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥३॥

फिर इसके पीछे यह सूत्र पढ़े—

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसि अइयारो कउ काइउ वाइउ माणसिउ उस्सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुचिंत्तिउ अणायारो अणाइच्छियव्वो असमण पावग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ते सुय सामाइयं तिण्हं गुत्तीणं चउण्ह कसायाणं पचण्ह महव्वयाणं छण्हं जीवनिकायाणं सत्तण्हं पिंडेसणाणं अठण्ह पवयणमाउणं नवण्हं बंभचेर गुत्तीणं दसविहे समण धम्मेण समणाणं जोगाणं जंखंडियं जंविराहियं जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ४ ॥

और फिर "तस्सोत्तरि" का पाठ पठन करे—जैसा कि पूर्व लिख चुके हैं ॥

तदनतर निम्नलिखित अतिचारोंका ध्यान करे—

आगमे तिविहे पण्णते तज्जहा सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे एहवा श्री ज्ञानके विषय जे कोइ अतिचार लागो होय ते मे आलोउं जंवाइद्धं १ वच्चामेलियं २ हीणक्खर ३ अचक्खर ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्ठुदिन्नं ९ दुट्ठु पडिच्छियं १० अकाले कउ सज्झाउ ११ काले न कउ सज्झाउ १२ असज्झाइयं सज्झायं १३ सज्झाइय न सज्झायं १४ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—श्री श्रमण भगवान्ने आगम तीन प्रकारसे प्रतिपादन किया है—सूत्रागम १ अर्थागम २ तदुभयागम ३। यह तीन प्रकारका आगम प्रतिदिन चार समय प्रत्येक मुनिको पठन करनेकी आज्ञा है, सो यदि अध्ययन करते समय चतुर्दश अतिचारोंमेंसे मुझे कोई भी अतिचार रूप दोष लगा हो तो मै उसकी आलोचना करता हूं, और उस पापसे पीछे हटता हूं—तथा उन

चतुर्दश दोषोंके परिहार करनेकी भावना करता हूं—जो कि निम्नलिखित हैं—

(१) अनुक्रमपूर्वक न पढना अथवा उवासी आते समय पठन करना—
(२) अज्ञानतासे अन्य शास्त्रका पाठ अन्य शास्त्रके साथ मिलाना—
(३) मूल सूत्रसे न्यून अक्षर उच्चारण करने—
(४) अथवा अधिक अक्षर पठन करने—
(५) पदसे हीन पठन करना—
(६) विनय रहित अध्ययन करना—
(७) योगहीन पढ़ना—
(८) घोषहीन पढ़ना—
(९) अयोग्यको सुन्दर ज्ञान पढ़ाना—
(१०) कुरीतिसे पठन करना—
(११) अकालमें स्वाध्याय करना—
(१२) अध्ययन कालमें स्वाध्याय न करना—
(१३) अनाध्यायमें स्वाध्याय करना—
(१४) और स्वाध्याय समय न पढ़ना—

दर्शन सम्यक्त्व रत्न पदार्थके विषय जे कोई अतिचार लागा होय ते मैं आलोउं श्री जिन वचन सम साचा श्रद्धा न होय प्रतीत्या न होय रुच्या न होय १ परदर्शनकी आकाक्षा वांछा कीधी होय २ फल प्रति संदेह आण्या होय ३ परपाषंडीकी प्रशंसा कीधी होय ४ परपाषंडोसे आलाप

संलाप सहसा परचा करा होय कराया होय करते प्रति अनुमोद्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

अर्थ—श्री अर्हन् भाषित वचनोंमें ही श्रद्धा और प्रतीत करनी चाहिये। परदर्शनकी आकांक्षा करनी योग्य नही है। किए हुए शुभाशुभ कर्मोंका फल तो अवश्यमेव भोगना पडता है इसमें संदेह करना व्यर्थ है। असत्य परायण (परपाषंडी) से धर्मका कुछ लाभ नहीं होता, इस लिए उसकी प्रशंसा करने और आलाप संलाप करनेसे बचना चाहिये इसीको सम्यक्त्व कहते हैं, सो यदि मैंने इससे विरुद्ध किया हो तो उस अतिचार रूप पापसे पीछे हटता हूं॥

चारित्र पंच महाव्रतके विषय जो कोइ अतिचार लागा होय ते में आलोउं ईर्या द्रव्य थकी नीची दृष्टि देखके न चाल्यो होय खेत्र थकी झूसरे प्रमाण काल थकी जावरीयते भाव थकी विना उपयोग प्रवर्त्यो होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३ ॥

अर्थ—मुनि चारित्रकी रक्षाके लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भावसे जीवोंकी रक्षा करता हुआ विचरे। यदि कदाचित् इससे स्खलित हो जाए, तो उसकी भूल माने, सो यदि कोई दोष मुझे लगा हो, तो मैं उसकी भूल मानता हूं॥

भाषा समितके विषय जे कोई अतिचार लागा होय ते मैं आलोउं भाषा कर्कश कठोर पर प्राणीको पीडाकारी छेदकारी भेदकारी कलेहकारी सावज्जकारी निश्चयकारी मिश्र खोटी भाषा बोलि होय बुलाइ होय बोलता प्रति अनुमोद्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥४॥

अर्थ—भाषा समितिके विषयमें यदि कोई मेरेसे अतिचार लगा हो, तो मै उसकी भूल मानता हूं, अर्थात् यदि मैने कर्कश कठोर और प्राणियोंको पीड़ित करनेवाली भाषा भाषण की हो, अथवा परका मर्म भेदन करनेवाली तथा सावद्यकारी और निश्चयकारी भाषा बोली हो, तो मै इस अतिचारसे पीछे हटता हू॥

एषणा समितके विषय जे कोइ अतिचार लागो होय ते मैं आलोउं

सोला उदगमण दोष सोला उत्पातन दोष दश एषणाके दोष पांच मांडलके दोष पूर्व कर्म पश्चात् कर्म असुज्झता आहार पानी भोगा होय भोगाया होय भोगता प्रति अनुमोद्या होय सुज्झते आहार पाणीकी गवेषणा न कीधी होय ४७ संतालीस दोष माहिलो जे कोइ दोष पाप लाग्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ५ ॥

अर्थ—एषणा समितिके विषयमें यदि कोई अतिचार लगा हो तो मै उसकी आलोचना करता हू—जैसेकि—पोडश उद्गमनके, पोडश उत्पातनके, दश एषणाके और पाच माडलेके दोषोंमेंसे कोई दोष लगा हो, अथवा अकल्पनीय और पूर्वकर्म तथा पश्चात् कर्मवाला आहार पानी लिया गया हो, तो उसमें लगे हुए अतिचार रूप दोषसे मै पीछे हटता हूं ॥

आयाण भड मत्त निखेवणा समितके विषय जे कोइ अतिचार लागो होय ते मैं आलोउं भंडोवगरण वस्त्र पात्र विना पूंजे विना पडिलेहे लीधा होय मूक्या होय भोगा होय भोगाया होय भोगतां प्रति अनुमोद्या होय

कालके काल यथाविधि पूंजणा पडिलेहणा न करी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ६ ॥

अर्थ—आदान भड मत्त निक्षेपणा समितिके विषयमें यदि किसी प्रकारसे अतिचार लगा हो, तो मैं उसकी आलोचना करता हू। यदि मैने वस्त्रपात्र तथा अन्य भाण्डोपकरण अयत्नसे उठाया हो, अथवा विना यत्न रखा हो, या किसीको ऐसा करनेका उपदेश दिया हो, वा इस प्रकार करनेवालोंकी अनुमोदना की हो, तो मै इस पापरूप अतिचारसे पीछे हटता हू ॥

उच्चार पासवण खेल जल मल सिंघाण परिठावणिया समितके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते मं आलोउं उच्चारादि विना पूंजे विना पडिलेहे परठव्या होय परठाया होय परठता प्रति अणुमोद्या होय परठके वोसरे वोसरे न करी होय जाता आवस्सही २ आवता निस्सही २ न करी होय थोडी भूमिका पडिलेही घणी भूमिका उपरि परठव्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थ—उच्चार, प्रस्रवण, श्लेष्मण, जल, मल, और सिंघाण आदिको यदि मन विधि सहित परिष्ठापन न किया हो (न गेरा हो) अथवा उपाश्रयसे कही अन्यतर कार्यवशात् जाते हुए "आवस्सही २" और पीछे आते हुए "निस्सही २" इस प्रकार उच्चारण न किया हो, तो इससे लगे हुए अतिचारसे मै पीछे हटता हूं ॥

मन गुप्तिके विषय जे कोइ अतिचार लाग्यो होय ते मैं आलोउं मन अट्ट दुहट्ट संकल्प विकल्प राग द्वेषकी चिंतवणा करी होय कराइ होय करता प्रति अनुमोदी होय मनका योग खोटा परवरताया होय जो मे देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ८ ॥

अर्थ—मनोगुप्तिके विषयमें यदि कोई अतिचार लगा हो, तो उसकी मैं आलोचना करता हू। मैंने संकल्प विकल्पके वशीभूत होकर आर्त वा रौद्र ध्यान किया हो, राग और द्वेषके आश्रय होकर बुरा विचार कीया हो या औरोंसे उक्त वर्ताव करवाया हो, ऐसा करनेवालोंकी प्रशंसा की हो, तो इसमें लगे हुए अतिचार रूप पापसे मै पीछे हटता हू ॥

वचन गुप्तिके विषय जे कोइ अतिचार लाग्यो होय ते मैं आलोउं

वचन स्त्रीकथा भत्तकथा देशकथा राजकथा चार विकथा माहिलि अनेरी विकथा करी होय कराइ होय करतां प्रति अणुमोदी होय विना उपयोग भाषा बोली होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥९॥

अर्थ—यदि मैने स्त्रीकथा, भक्तकथा, देशकथा और राजकथा आदिमेंसे कोई भी विकथा कही हो, अथवा दुष्ट भाषा बोली हो, तो इसमें लगे हुए अतिचाररूप दोषको छोड़कर मै शुद्धतापूर्वक वचनगुप्तिको धारण करता हूं ॥

काया गुप्तिके विषय जे कोइ अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं काया उठदे वैठदे हिलते चलते संकोचदे पसारदे भूत प्राणो जीवोंकी विराधना करी होय कराई होय करतां प्रति अणुमोदी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १० ॥

अर्थ—काय गुप्तिके विषयमे यदि कोई दोष लगा हो, तो मै उसकी आलोचना करता हूं—अर्थात् उठते, बैठते, हिलते, चलते, सकोच करते, लेटते और खड़ा होते समय यदि मैने

अयत्नसे वर्त्ताव किया हो, अथवा इस प्रकारसे किसी जीवकी विराधना हो गइ हो, तो मै भूल मानकर उस पापसे पीछे हटता हू ॥

पृथ्वी कायाके विषय जे कोइ अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं पृथ्वीकाय माटी मरुढ गेरु पाडु हिंगलु हरताल लून खड़िया जंगाल सचित्त रज प्रमुखकी विराधना करी होय कराई होय करता प्रति अनुमोदी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ११ ॥

अर्थ—पृथिवीकायके विषयमें यदि कोई अतिचार लगा हो, तो मै उसकी आलोचना करता हू—गेरु, पाडु, हिंगलु, (सिंगरफ) हरताल, लवण, खडिया, इत्यादि सचित्त पृथिवी कायकी यदि मैने विराधना की हो, करवाई हो, करनेवालोंको अच्छा समझा हो, तो मैं भूल मानता हूं, और इस अतिचारसे पीछे हटता हूं ॥

अप्कायके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं अपकाय ओस हेम गडा फुंवार छार धूयर प्रमुखकी विराधना करी होय कराई

होय करतां प्रति अनुमोदी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १२ ॥

अर्थ—ओस (शबनम) हिम (बरफ) गडा, फुवार, छार, धुन्द प्रमुख अप्कायके जीवों को यदि मैने संताप दिया हो, अथवा किसी प्रकारसे दुःखित किया हो, तो मै इस अतिचार-रूप पापको छोडता हूं ॥

तेउकायके विषय जे कोइ अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं तेउ-कायाके संघट्टे आहार पानी वहरया होय वहराया होय वहरतां प्रति अनु-मोद्या होय तेउकाय प्रमुखकी विराधना करी होय कराई होय करतां प्रति अनुमोदी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥१३॥

अर्थ—अग्निकायके विषयमें यदि कोई दोष लगा हो, तो मै उसकी आलोचना करता हूं। अग्निकायके संघट्टनसे (स्पर्शसे) यदि आहारपानी ग्रहण किया हो, करवाया हो, या करनेवा-लोंको भला समझा हो अथवा तेजः काय प्रमुखकी विराधना की हो तो मै उस पापसे पीछे हटता हूं॥

वाउकायाके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते मैं आलोउं वाउकाया वस्त्रे करी लूगडे करी छेडे करी मुखे करी उठते बैठते हालते चालते पूंजते पडिलेहेते वाउकाया प्रमुखकी विराधना करी होय कराई होय करता प्रति अनुमोदी होय जो मे देवसि आइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १४ ॥

अर्थ—वस्त्र द्वारा तथा वस्त्रके खण्ड द्वारा या मुखसे किसी प्रकार भी उठते, बैठते, हिलते, चलते, प्रतिलेखना करते, वा भाषण करते समय वायु काय प्रमुखकी विराधना की हो, या करवाई हो, करनेवालोंकी अनुमोदना की हो, तो उस अतिचाररूप पापसे मैं पीछे हटता हू॥

वनस्पति कायाके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते मैं आलोउं वनस्पति कंद मूल फल फूल बीज हरी अंकुर कणक कपासिया नीलण फूलण प्रमुखकी विराधना करी होय कराई होय करता प्रति अनुमोदी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १५ ॥

अर्थ—वनस्पतिकाय विषय कंद, मूल, फल, फूल, बीज, हरी, और अंकुरादिकी विराधना की हो, या करवाई हो, करनेवालोंकी अनुमोदना की हो, तो उस अतिचाररूप पापसे मैं पीछे हटता हूं॥

बेइन्द्रियके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं बेइन्द्रिय सीप शंख जोक अळसिया गंडोया चूरनीया कौड़ी लट गंजाई प्रमुखको विराधना करी होय कराई होय करतां प्रति अनुमोदी होय जो मे दवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १६ ॥

अर्थ—द्विइन्द्रियके विषयमें यदि कोई दोष पाप लगा हो, तो मै उसकी आलोचना करता हूं अर्थात् सीप, शख, जलौका, अळसिया, गंडोया, चूरणीया, कौड़ी, लट, आदि द्विइन्द्रिय जीवोंको यदि मैंने किसी प्रकारसे कष्ट पौहचाया हो, तो इस पापको मै छोड़ता हूं॥

तेइन्द्रियके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं तेइन्द्रिय जूं लीख चाचड़ माकड़ ढोरा सुलसली कोड़ी कुंथुवा प्रमुखको विरा-

घना करी होय कराई होय करता प्रति अनुमोदी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १७ ॥

अर्थ—जू, लाख, चाचड़, माकड़, होरा, सुसरी, पिपीलिका, कुथुवा, आदि तीन इन्द्रियवालोंको यदि कदाचित् मैंने दुःख दिया हो, या औरोंसे दिलवाया हो, वा इनको दुःख देनेवालोंकी स्तुति की हो, तो इसमें लगे हुए पापसे मैं पीछे हटता हूं ॥

चौरिंद्रियके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते मैं आलोउं चौरिन्द्रिय मक्खी मच्छर भमरी भमरा टिड पतंगिया विच्छू प्रमुखकी विराधना करी होय कराई होय करतां प्रति अनुमोदी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १८ ॥

अर्थ—मक्षिका, मत्सर, भ्रमरी, भ्रमरा, पतंगिया, और वृश्चिक प्रभृति जीवोंको तीन करण और तीन योगोंसे यदि मैंने सताया हो, तो मैं इस पापका पश्चात्ताप करता हूं, और आगेको कभी न करूंगा ऐसी भावना करता हूं ॥

पंचेन्द्रियके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं पंचेंद्रिय जलचर थलचर खेचर उरपुर भुजपुर सण्णो असण्णो गरभेजक चौदे ठिकाणे छमुछम मनुष्य पंचेंद्रिय प्रमुखकी विराधना करी होय कराई होय करतां प्रति अनुमोदो होय जे मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १९ ॥

अर्थ—पंचेंद्रियके विषयमें यदि कोई अतिचार लगा हो, तो उसकी आलोचना करता हूं—कदाचित् मैंने जलचर, स्थलचर, खेचर, जीवोंको कष्ट दिया हो, तथा छातीके बल चलनेवाले, अथवा भुजोंके द्वारा गमन करनेवाले, और संज्ञी, असंज्ञी, गर्भेजक चतुर्दश स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले सम्मूर्छम मनुष्य पचेन्द्रिय इत्यादिको दुःखी वा व्यथित किया हो, तो मैं भूल मानता हूं, और भविष्यत्कालमें फिर ऐसा न करूंगा यह प्रतिज्ञा करता हूं, अर्थात् इत्यादि दोषोंको त्यागकर प्रथम महाव्रतको शुद्ध धारण करता हूं ॥

वीजे महाव्रतके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं

क्रोधे करी लोभे करी भये करी हासे करी क्रीडे करी कतूहले करी रागे करी द्वेषे करी मृषावाद झूठ बोल्या होय बोलाया होय बोलतां प्रति अनुमोद्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २० ॥

अर्थ—कदाचित् मैंने क्रोधसे, लोभसे, भयसे, क्रीड़ासे, कुतूहलसे, राग और द्वेषसे, मृषावाद बोला हो, या औरोंको बोलनेका उपदेश दिया हो, तथा जो झूठ बोलते है उनकी अनुमोदना करी हो, इत्यादि यावत् द्वितीय महाव्रतमें लगे हुए समस्त अतिचारोको छोडता हूं॥

तीजे महाव्रतके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते मैं आलोउ देव अदत्त गुरु अदत्त राय अदत्त गाहावइ अदत्त सहामोय अदत्त पांच अदत्तादान माहेला अनेरा अदत्तादान लीधा होय भोग्या होय भोगाया होय भोगवता प्रति अनुमोद्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २१ ॥

अर्थ—तृतीय महाव्रतमें यदि कोई दोष लगा हो, तो मै उसकी आलोचना करता हूं, जैसे

कि-देवअदत्त, गुरुअदत्त, राजअदत्त, गाथापति (सेठ) अदत्त और स्वधर्मीअदत्त इन पांच अदत्त दानोंमेंसे यदि कोई अदत्त दान मैंने ग्रहण किया हो, भोगा हो, भोगवाया हो, भोगनेवालोंका अनुमोदना की हो, तो इसकी भूल मानता हू ॥

चौथे महाव्रतके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं कामराग स्नेहराग दृष्टिराग देवता देवी सम्बन्धि मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि माठा जोग प्रवरताया होय नव प्रकारका उदारिक सम्बन्धि नव प्रकारका वैक्रिय सम्बन्धि अठारा प्रकारका मैथुन सेव्या होय सेवाया होय सेवतां प्रति अनुमोद्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥२२॥

अर्थ—यदि मैंने देव, देवी, मनुष्य, तिर्यंच सम्बन्धि कामभोगोंकी अभिलाषा की हो तथा कामराग, स्नेहराग, दृष्टिराग आदिमेंसे कोई राग किया हो और नव प्रकारका उदारिक, तथा नव-प्रकारका वैक्रिय अर्थात् अठारह प्रकारके मैथुनमेंसे कोई मैथुन कर्म किया हो, मन खोटा वर्ताया हो एवं चतुर्थ महाव्रतमें यदि कोई मुझमें दोष लगा हो तो उसकी भूल मानता हूं, और समस्त आयुपर्यंत ब्रह्मचर्य महाव्रत धारण करता हूं ॥

पाचमे महाव्रतके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते में आलोउं छती वस्तुकी ममता मूर्छा कीधो होय अछती वस्तुकी वाछा कीधी होय भंडोवगरण वस्त्र पात्र शरीर उपरि ममता मूर्छाभाव आण्यो होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥ २३ ॥

अर्थ—पाचवें अपरिग्रह व्रतमें यदि कोई अतिचार लगा हो अर्थात् विद्यमान वस्तुकी ममता की हो, तथा अविद्यमान वस्तुकी आकांक्षा करी हो और भाडोपकरण, वस्त्र, पात्र आदि पर ममता मूर्छा स्नेहभाव किया हो, तो इस अतिचारकी मै भूल मानता हूं, और इसमें लगे हुए अतिचारोंको छोड़ता हूं ॥

छठा रात्रीभोजनके विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते मे आलोउं आसणं पाणं खाइमं साइमं सीत मात्र रातवासी राख्या होय रखाया होय राखता प्रति अनुमोद्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥ २४ ॥

अर्थ—रात्रिको यदि मैंने अन्न, पानी, खाद्य, स्वाद्य, चार प्रकारके आहारोंमेंसे किंचित् मात्र भी वासी रक्खा हो, और भोगा हो, भोगाया हो तथा भोगनेवालोंकी प्रशंसा की हो, तो मैं इसका पश्चात्ताप करता हू, और इस (पाप) का त्याग करता हू ॥

पांच महाव्रतकीपचीस भावना सम आराधी न होय सम पाली न होय सम फरसी न होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥२५॥

अर्थ—इन पूर्वोक्त पाच महाव्रतोंकी पंचविंशति भावना यदि सम्यक् प्रकारसे न आराधी हों, अथवा न पाली, न स्पर्श की हों, तो इसकी भूल मानता हूं, और इन पाच महाव्रतोंको पंचविंशति भावनाओंके साथ सम्यक् प्रकारसे धारण करता हूं ॥

तेतीस आसातना माहिली जे कोई अनेरी आसातना करी होय कराई होय करतां प्रति अनुमोदी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २६ ॥

अर्थ—तेतीस आशातनाओमेंसे यदि कोई भी आशातना मैंने की हो, कराई हो, और आशातना करनेवालोंकी अनुमोदना की हो, तो इसमें लगे हुए अतिचार पापसे मैं पीछे हटता हूं ॥

अठारह पापस्थानकने विषय जे कोई अतिचार लाग्यो होय त म आलोउं प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पिशुन १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामोसा १७ मिच्छा दर्शनशल्य १८ एह अठारह पापस्थानक माहिलो कोई पापस्थानक सेव्या होय सेवाया होय सेवता प्रति अनुमोद्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २७ ॥

अर्थ—प्राणातिपात (जीवहिंसा) १ मृषावाद (असत्य) २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह (क्लेष) १२ अभ्याख्यान (अन्यको तोहमत लगाना) १३ पिशुनता (चुगली करना) १४ परपरिवाद (दूसरोंकी निन्दा करना) १५ रतिअरति (विषय आदिके मिलने पर हर्ष और न मिलने पर चिंता) १६ माया मृषा १७ मिथ्या दर्शन शल्य १८—इत्यादि अष्टादश पापस्थानक यदि मैंने सेवन किए हों,

अथवा दूसरोंको इनके सेवनका उपदेश दिया हो, और जो इनको सेवन करते है उनकी यशः कीर्ति की हो, तो मै इसकी भूल मानता हूं और इन्हें छोड़ता हूं॥

मूल गुण पंचमहाव्रत उत्तर गुण दशविधि पचक्खाण इण विषय जे कोई अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार जाणते अजाणते मन वचन काया कर सेव्या होय सेवाया होय सेवतां प्रति अनुमोद्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २८* ॥

अर्थ—मूल गुण पाच महाव्रतोंमें और उत्तर गुण दश प्रकार प्रत्याख्यान रूप नियमोंमें यदि मैने कोइ अतिक्रम अथवा व्यतिक्रम, अतिचार अथवा अनाचार जानकर या भूलकर स्वयं मैंने अतिचार सेवन किया हो, औरोंको उपदेश दिया हो, सेवनकर्ताओंकी प्रशंसा करी हो, तो इस प्रकार लगे हुए इस अतिचाररूप दोपसे मैं पीछे हटता हूं॥

इच्छामि आलोइयं जो मे देवसि अइयार कओ काइयो वाइयो मान-

---

* ध्यानमे २८ पाठ पर्यन्त ही पढ़ने चाहिये ॥

सीओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुचितिउ अणयारो अणिच्छियव्वो असमण पावग्गो नाणे तह दंसणे चरिते सुइय सामाइयं तिण्ह गुत्तीण चउण्हं कसायाणं पंचण्हं महव्वयाणं छण्हं जीवनिकायाणं सत्तण्ह पिंडेसणाणं अठण्हं पवयण मायाणं नवण्हं वभचेरगुत्तीण दसविहे समण धम्मे समणाण जोगाणं जंखडियं जविराहियं जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २९ ॥

अर्थ—हे भगवन्! दिन सम्बन्धि लगे हुए मानसिक, वाचिक और कायिक अतिचाररूप दोषोंकी आलोचना आपकी शाक्षिसे करता हू। यदि मैंने शास्त्रसे विरुद्ध कार्य किया हो, दुष्ट मार्गमें गमन किया हो, अकल्पनीय ग्रहण किया हो, अकरणीय कार्य तथा कुत्सित ध्यान किया हो, और बूरी चिन्तवना करी हो, अथवा मेरी सयम वृत्तिमें कोई अनाचरण लगा हो, इच्छा न करने योग्य वस्तुकी इच्छा करी हो, श्रमणवृत्तिसे विरुद्ध वर्ताव किया हो, तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, और श्रुत, सामायिकमें अथवा तीन गुप्तियोंमें, चार कषायोंमें, पाच महाव्रतोंमें, छे जीव-

निकायोंमें, सात पिण्डेषणामें, अष्ट प्रवचन मातामें, नव प्रकारकी ब्रह्मचर्यकी गुप्तिमे, और दश प्रकारके श्रमण धर्ममें तथा श्रमणोंके योगोमें यदि किसी प्रकारमे दोष लगा हो, या पूर्वोक्त समस्त नियम खंडित हुए हो, विराधित हुए हो, तो इसमें लगे हुए अतिचाररूप पापको मै छोड़ता हूं और इससे पीछे हटता हूं ॥

सव सव देवसिय दुचितियं दुभासियं दुचिठियं दुपालियं अधिका ओछा काना मात्र विपरीत कह्यो होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३० ॥

अर्थ–मैने दिनमे यदि किसी प्रकारमे दुष्टभाषा भाषण की हो या शास्त्रको न्यूनाधिक पठन किया हो, अथवा कदाचित् अर्हनाज्ञानुकूल वर्ताव न किया हो तो उसमे लगे हुए अतिचारोका त्याग करता हूं ॥

फिर नमोकार मंत्र पढकर ध्यान पारे । यहांतक सामायिक आवश्यक तो पूर्ण हो गया॥

फिर तिक्खुत्तोसे वंदना करके द्वितीयावश्यक करे अर्थात्- जो लोगस्स उज्जोयगरेका पूर्व पाठ लिखा गया है उसे खडा होकर एक वार पढ़े ॥

फिर तिक्खुत्तोका पाठ पढकर वंदना करके तृतीय वंदनारूप आवश्यक करे, जो निम्न लिखितानुसार है।

'इच्छा मि खमासमणो' का पाठ दो वार पढे किन्तु प्रथम वार जब (निसिहियाय) ऐसा सूत्र आवे तब हाथ जोडकर बैठ जावे। फिर षट् प्रकारसे आवर्त्तन निम्न लिखितानुसार करे जैसे कि–प्रथम (अहोकायं) इस सूत्रको पठन करता हुआ तीन आवर्त्तन करे, उदाहरण, दोनों हाथ दीर्घ करके दश अंगुलिया गुरुके चरणों पर लगाता हुआ मुखसे (अ) अक्षर उच्चारण करे। फिर दोनों हाथ मस्तकको स्पर्श करता हुआ (हो) अक्षर कहे, सो इस प्रकारसे प्रथम आवर्त्तन होता है। फिर इसी प्रकार "का" और "य" अक्षरोंके उच्चारणसे द्वितीय आवर्त्तन हो जाता है–अपितु पूर्वोक्त विधिसे ही "का" और "य" अक्षरके कहनेसे तृतीय आवर्त्तन होता है। इसी प्रकार "जत्ता" "भे" "जवणिज्जं च भे" इन सूत्रोंके भी तीन२ ही आवर्त्तन होते है जैसे कि–प्रथम मंद स्वरके साथ "ज" अक्षर उच्चारण करे, फिर मध्यम स्वरसे "त्ता" ऐसे कहे, फिर ऊंचे स्वरके साथ हाथ मस्तकको लगाता हुआ "भे" ऐसे वर्णका उच्चारण करे, सो इन तीनों अक्षरोंसे प्रथम आवर्त्तन होता है। फिर 'ज" "व" "णि" यह तीन ही अक्षर पूर्वोक्त स्वरोंके अनुकूल उच्चारण करनेसे द्वितीय आवर्त्तन होता है। फिर "ज" "च" "भे" इन तीनों वर्णोंके पूर्वोक्त

प्रकारसे उच्चारण करनेसे तृतीय आवर्तन होता है । इस प्रकारसे षट् आवर्त्तन एक पाठसे होते हैं और द्विवार उच्चारण करनेसे द्वादश आवर्त्तन हो जाते है ॥ किन्तु द्वितीय वारके पाठमें "आवस्सियाए" ऐसा पाठ न पढे अपितु सर्व सूत्र निम्न लिखितानुसार है ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निस्सीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निस्सही अहोकाय कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताण बहुसुभेणं भे देवसी वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसि वइक्कमं आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणो देवसियाए आसायणाए तेत्तीसणयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्मअइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसि अइयार कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(खमासमणो) हे क्षमाके श्रमण शान्तिके समुद्र (जावणिज्जाए) जिस

करके कालक्षेप होता है ऐसी शक्ति करके तथा जन्म समयके बालकवत् जिसके दोनों हाथोंकी दोनों मुष्टिया आखों पर होती है उसकी नाई (निस्सीहियाए) जिस शरीरका मुख्य कर्तव्य प्राणातिपातके निषेधका है ऐसे शरीर करके आपको (वंदिउ) वंदना करनेकी (इच्छामि) इच्छा करता हूं (मिउग्गह) स्वदेह प्रमाण प्रमाण की हुई भूमिकामें प्रवेश करनेकी (मे) मुझको (अणुजाणह) आज्ञा दीजिए। इस प्रकारसे आज्ञा लेकर अवग्रहमें प्रवेश करे (निस्सहि) जिसने गुरुदेवको वदना विना अन्य क्रियारूप व्यापारका निषेध किया है, फिर मुखसे ऐसे कहे कि (अहोकायं) हे क्षमाश्रमण आपके चरणकमलोंको (काय) हाथ करके (संफास) स्पर्श करता हू। इस प्रकार आज्ञा लेकर चरणकमलोंको स्पर्श करके ऐसे कहे कि—(किलामो) यदि आपके शरीरको मैंने कोई पीडा दी हो (भे) हे भगवन् आप (खमणिज्जो) क्षमा करनेके योग्य है इसलिए क्षमा कीजिए, क्योंकि (बहुसुभेण) बहुत ही शुभ क्रियाओं करके (भे) आपका (दिवसो) दिवस [दिन] (वइक्कंतो) अतिक्रान्त हुआ है और आप (अप्पाकिलंताणं) अल्प वेदनावाले हैं—शारीरक मानसिक वेदनासे रहित है। यदि शारीरिक वेदना आपको उत्पन्न होती है आप उसमें आर्त और रौद्र ध्यान नही करते है। हे करुणासमुद्र (जत्ता) तप नियम सयम स्वाध्यायरूप यात्रा (भे) आपमें सततं विद्यमान है (च) और (जवणिज्ज भे)

इन्द्रिय नोइन्द्रियके उपशम करनेसे आपका शरीर परम सुन्दर और शान्तिरूप हो गया है। (खमासमणो) हे क्षमाश्रमण (देवासियं) दिन सम्बन्धि (वइक्कम्मं) व्यतिक्रम हुआ मेरा किया हुआ जो अपराध उसकी मै (खामेमि) आपसे क्षमा मागता हू—आप दोषको क्षमा करनेके योग्य है इसलिये क्षमा कीजिए और (आवसिआए) अवश्य करणीय प्रतिलेखनादि क्रियाओंके करनेसे यदि मुझको अतिचार लग गया हो तो मै उस अतिचाररूप दोषसे (पडिक्कमामि) पीछे हटता हूं (खमासमणो) क्षमाश्रमणोंके सम्बधि [मुनियोंके सम्बन्धि] (देवसिआए) दिनमें की हुई (आसायणाए) आशातनायें जैसेकि—

(तेत्तीसणयराए) त्रयस्त्रिंशत् [तेत्ती] आशातनायोंमेंसे अन्य वा अमुक आशातनायें की हों तथा (जंकिंचि मिच्छाए) जो किंचित् मात्र भी मिथ्याभावका वर्ताव किया हो तथा (मणदुक्कडाए) मन सम्बधि जो पाप है उन आशातनायें करके इसी प्रकार (वयदुक्कडाए) वचनके पाप करके (कायदुक्कडाए) कायाके पाप करके (कोहाए) क्रोध करके (माणाए) मान करके (मायाए) छल करके (लोहाए) लोभ करके (सवकालिआए) सर्व कालमें यदि गुरु आदिकी अविनय की हो (सव्वमिच्छोवयाराए) सर्व मिथ्यापचार करके आशातनायें करी हों (सवधम्मअइकमणाए) सर्व धर्म अष्ट प्रवचन दया माताके उल्लघन करनेसे यह सर्व पूर्वोक्त

(आसायणाए) आशातनायें करके (जो मे अइयार कओ) जो मैंने अतिचाररूप दोष किया है (तस्स) उस अतिचारसे (खमासमणो) हे क्षमाश्रमण आपके समीप (पडिक्कमामि) प्रतिक्रमण करता हू (निंदामि) अपने आत्माकी निंदा करता हू (अप्पाणं) आत्मामेंसे दुष्ट कर्मोंका (वोसिरामि) परित्याग करता हू॥

भावार्थ—अपनी इच्छाके अनुसार पापकर्मको दूर करता हुआ शान्तिरूप गुरुको वंदना करे क्योंकि वंदना करनेसे नीच गोत्र कर्मको क्षय कर देता है ऊंच गोत्रको बांधता है। बैठकर गुरुके चरणकमलोंको हस्तादि करके स्पर्श करे, फिर कहे हे भगवन् आप क्षमा करो यदि मेरेसे आपको पीडा हुई हो, क्योंकि आप अल्प वेदनावाले हैं आपका दिन बहुत ही शुभ क्रियाओं करके व्यतीत हुआ है और आप क्षमा करनेको योग्य है। भावयात्रा मुनियोंके सदैव कालही विद्यमान रहती है, इसलिए शिष्य यात्राके संबोधनसे गुरुसे फिर कहता है कि—हे भगवन् आपका शरीर इन्द्रियोंके उपशम करनेसे शान्तिरूपतासे विराजमान है। गुरुसे दिनमें किए हुए दोषोंकी क्षमा करनेकी प्रार्थना आवश्य ही करे क्योंकि क्षमा मांगनेमे अविनय भाव दूर हो जाता है। त्रयस्त्रिंशत् प्रकारकी आशातनायें करके वा मन वचन काया करके तथा चारों कषायों करके कभी भी गुरुकी आशातना न करे, यदि किसी प्रकारसे भी गुरुकी आशातना हो गई हो तो

उसका पश्चात्ताप करे। फिर अपने आत्मा द्वारा उस कर्मकी निंदा करता हुआ पुनः कभी भी गुरुकी आशातना न करे क्योंकि अविनय भावसे ज्ञानादि गुणोंकी साफल्यता नहीं होती ॥

इति श्री वंदनारूप तृतीयावश्यक समाप्त ॥

फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वंदना करके चतुर्थ आवश्यक करनेकी गुरुमहाराजजीसे आज्ञा लेकर पूर्वोक्त अतिचार जो ध्यानमें पठन किये थे उनको खडा होकर मध्यम स्वरसे पढे किन्तु सर्व पाठोंके अंतमें जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं—ऐसे कहना चाहिए क्यों कि ध्यानमें केवल चिन्तना ही की जाती है और ३० पाठ पूर्ण पढ़कर फिर तिक्खुत्तोके पाठसे गुरुजीको वंदना करके बैठकर दक्षिण जानु ऊर्ध्व करके और वाम जानु भूमिपर रखकर (समण-सूत्र) का पाठ करे जो कि निम्न लिखितानुसार है—

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झा-याणं। णमो लोए सव्व साहूणं॥ *

* एसो पंच णमोकारो। सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं॥ १॥

अर्थ—(णमो) [नमः] नमस्कार (अरिहंताण) [अर्हद्भ्यः] अर्ह् पूजाया धातुसे जो शतृ प्रत्ययान्त होकर अर्हत् शब्द बनता है तिसका नाम प्राकृत भाषामें अरिहंत है अर्थात् जो सबके पूज्य सर्वज्ञ सर्वदर्शी है तिन अरिहंत भगवन्तोंको नमस्कार हो अर्थात् उनको नमस्कार हो। (णमो) [नमः] नमस्कार (सिद्धाण) [सिद्धेभ्यः] षिधूसंराधौ धातुसे जो 'क्त' प्रत्ययान्त होकर सिद्ध शब्द बना है अर्थात् जो सिद्ध, बुद्ध, अजर, अमर, अशरीरी, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हैं उनको नमस्कार हो। (णमो) [नमः] नमस्कार (आयरियाण) [आचार्येभ्यः] जो आद्

हिंदी पदार्थ—(एसो) [एष] यह (पच) [पञ्च] पञ्च (नमोक्कारो) [नमस्कार] नमस्कार रूप पद (सव्व) [सर्व] सारे (पाव) [पाप] पापोंके (पणासणो) [प्रणाशन] प्रणाशनहार हैं अर्थात् पापोंके नष्ट करनेवाले हैं (मगल्लाण) [मगलाना] मागलिक है (च) [च] और अपितु चाव्यय है (सव्वेसिं) [सर्वेषा] सर्व स्थानोपरि पढे हुए (पढम) [प्रथम] प्रथम अर्थात् इत्यादि पदार्थोंसे पूर्व (हवइ) [भवति] होता है (मगल) [मङ्गलम्] माङ्गलिक है॥

भावार्थ—इस महा मन्त्रके पाञ्च ही नमस्काररूप पद सर्व पापोंके नाश करनेवाले हैं और सर्व स्थानोपरि पठन किये हुवे इत्यादि पदार्थोंसे भी पहिले मगलिक है क्योंकि अनन्तगुण युक्तोक्त महामन्त्र है॥

उपसर्ग पूर्वक चर् गति भक्षण धातुसे कृदन्तका ण्यण् प्रत्ययान्त होकर सिद्ध होता है अर्थात् आचार्य्योंको नमस्कार हो। (णमो) [नमः] नमस्कार हो (उवज्झायाणं) [उपाध्यायेभ्यः] उपाध्यायोंको जो कि उप अधि उपसर्गपूर्वक इङ् अध्ययने धातुसे कृदन्तका घञ् प्रत्ययान्त होकर बनता है। (णमो) [नमः] नमस्कार हो (लोए सव्व साहूण) लोकृदर्शने सृगतौ राध-साधसंसिद्धौ इन धातुओंसे जो णमो लोए सव्व साहूणं शब्द बनता है सो [लोके सर्वसाधुभ्यः] लोकमें जितने साधु है अर्थात् लोकमें सर्व साधुओंको नमस्कार हो जो कि सुगुणों करके युक्त है॥

भावार्थ—इस महामन्त्रमे यह वर्णन है कि अनन्त गुणयुक्त चतुर्घाति कर्म नष्ट कर्ता और जिनके द्वादश गुण प्रगट हुए हैं ऐसे गुणगणालंकृत श्री अरिहंतजी महाराजोंको नमस्कार हो। पुनः जिनके अशरीरी सिद्ध बुद्धाजरामरेत्यादि अनेक नाम सुप्रख्याति संयुक्त सुप्रसिद्ध है जिन्होंके सर्व कर्म क्षय हो गये है अर्थात् जो कर्मरूपी रजसे विमुक्त हो गये है और जिन्होंके अष्ट गुण प्रादुर्भूत हुए है इत्यादि अनेक सुगुणों सहित श्री सिद्ध महाराजाओंको नमस्कार हों अपितु जो षट्त्रिंशत् गुणोंसे युक्त मर्यादासे क्रिया करनेवाले जिनकी ज्ञानमें गति अधिक है तथा जो सम्यक् प्रकारसे गच्छ (साधुसमुदाय) की सारणा (रक्षा करना) वारणा (शिथि-लाचार होनेको सावधान करना] साधुमण्डलको हितशिक्षा देना तथा वस्त्रपात्रादि द्वारा भी

मुनियोंको सहायता देनी वा परम्परा शुद्ध शास्त्रार्थ पठन कराना, अपितु यदि कोई दुर्बल अर्थात् जंघाबल क्षीण रोगादियुक्त साधु हो उसको यथायोग्य सहायता करना इत्यादि अनेक गुणोंसे युक्त है और उक्त वार्ताओंके पूर्ण करनेमें सदैव कटिबद्ध है ऐसे श्री आचार्योंको नमस्कार हो—अपिच जो पंचविंशति गुणोंसे अलङ्कृत हो रहे है अर्थात् जो एकादश अंग तथा द्वादश उपांगको स्वय पढते है औरोंको पढाते है ऐसे उपाध्याय वा सप्तविंशति गुणयुक्त मुनियोंको भी नमस्कार हो ॥

करेमि भंते सामाइयं सव्वं सावज्जंजोगं पच्चक्खामि जावजीवाय तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए कायेण न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्ने न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(करेमि) करता हूं (भंते) हे भगवन् (सामाइयं) सामायिकको (सव्वं) सर्व प्रकारसे (सावज्जजोगं) सावद्य [पापमय] योगोंका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं (जावजीवाय) यावत् जीवपर्यन्त (तिविहं तिविहेणं) तीनो करण और तीनों योगोंसे जैसेकि—(मणेणं) मन करके (वायाए) वचन करके (कायेण) काया करके (न करेमि) न करूं

(न कारवेमि) और नाही ओरोंसे कराऊं (करंतंपि अन्ने न समणुजाणामि) जो सावद्य कर्म करते है ऐसे अन्य जनोंकी अनुमोदना भी नहीं करूं (तस्स भंते) हे भगवन् उस पापसे (पडिक्कमामि) पीछे हटता हूं (निंदामि) आत्मसाक्षीसे निंदा करता हूं (गरिहामि) गुरुकी साक्षीसे विशेष आत्मनिंदा करता हू और (अप्पाणं वोसिरामि) अपनी आत्मासे पापको छोड़ता हूं अथवा ज्ञानके द्वारा अपनी आत्माको पापोंसे पृथक् करता हूं॥

भावार्थ–तीनों करण और तीनो यांगोंसे पापको छोडकर जीवन पर्यन्त सामायिकको धारण करे और अपनी आत्माको पापोसे सदैवकाल ही पृथक् रखे॥

चत्तारि मंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहुमंगलं केवलिपन्नत्तो धम्मोमंगलं चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहु लोगुत्तमा केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंता-

१ अरिहंताजीका शरणा सिद्धाजीका शरणा साधुजीका शरणा श्री केवलि परूप्या धर्मका शरणा यह चार ही शरणे अपने और नशरणो कोय जो भव्य प्राणी आदरे अक्षय अचल गति होय॥१॥ उपलक्षणसे ऐसे भी कहा जाता है॥

सरणं पव्वज्जामि सिद्धासरणं पव्वज्जामि साहुसरण पव्वज्जामि केवलिपन्नत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि ॥

(चत्तारि मंगलं) चार मगल है जैसे कि-(अरिहतामंगलं) अरिहत मगल (सिद्धामगलं) सिद्ध मगल (साहुमगल) साधु मगल (केवलिपन्नत्तो धम्मोमगल) श्री केवली भगवान्का प्रतिपादन किया हुआ धर्म मगल, और (चत्तारि लोगुत्तमा) चार ही वस्तु लोकमें उत्तम है जैसेकि (अरिहंता लोगुत्तमा) अरिहत लोकमे उत्तम है (सिद्धा लोगुत्तमा) सिद्ध लोकमें उत्तम है और (साहु लोगुत्तमा) साधु लोकमें उत्तम है (केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा) केवलि भगवान्का प्रतिपादन किया हुआ धर्म लोकमें उत्तम है, फिर (चत्तारि सरण पवज्जामि) चार ही शरण ग्रहण करता हूं जैसे कि-(अरिहता सरण पवज्जामि) अरिहतोंका शरण ग्रहण करता हू (सिद्धासरण पवज्जामि) सिद्धोंका शरण ग्रहण करता हू (साहुसरण पवज्जामि) साधुओंका शरण ग्रहण करता हू (केवलिपन्नत्तो धम्मो सरण पवज्जामि) श्री केवली भगवान्के प्रतिपादन किए हुए धर्मका शरण ग्रहण करता हू ॥

भावार्थ-लोकमें चार ही मगल और चार ही उत्तम पदार्थ है अपितु चार ही शरण है जैसेकि-अरिहंत १ सिद्ध २ साधु ३ और धर्म ४ ॥

इच्छामि ठामि जो मे देवसि अइयार कउ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुचिंतिउ अणायारो अणाइच्छिव्वो असमणपावग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ते सुयसामाइयं तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाण पंचण्हं महव्वयाणं छण्हं जीवनिकायाणं सत्तण्हं पिंडेसणाणं अट्ठण्हं पवयण माउणं नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं दसविहे समण धम्मे समणाण जोगाणं जंखंडियं जंविराहियं जो मे देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(इच्छामि ठामि) एक स्थानमें रहकर आलोचना करनेकी इच्छा करता हू (जो मे देवसिओ अइयारो कओ) जो मैंने दिन सम्बन्धि अतिचार किये गये है जिस प्रकारसे अतिचार किये गये है उसी प्रकारसे कहते है–(काइओ) कायासे अतिचार किये हों (वाइओ) वचनसे अतिचार किये हों (माणसिओ) मनसे अतिचार किये हों, सो काया और वचनके द्वारा किये हुए किंचित् अतिचारोंका स्वरूप कहते है जैसे कि–(उस्सुत्तो) उत्सूत्र भाषण किया हो (उम्मग्गो) उन्मार्गकी प्रतिपादनता करी हो (अकप्पो) अकल्पनीय कार्य

किये हों (अकरणिज्जो) अकरणीय कृत्य किये हों, तथा मनके द्वारा निम्न प्रकारसे अतिचार
होते है (दुज्झाउ) दुर्ध्यान किया हो जैसे कि-आर्त्तध्यान रौद्रध्यान (दुर्चितिउ) दुष्ट चित-
वना करी हो (अणायारो) सर्वथा ही व्रतोंका भंग किया हो (अणाइच्छियव्वो) अयोग्यकी
इच्छा करी हो (असमणपाउग्गो) अश्रमण भावका वर्त्ताव किया हो, फिर (नाणे) ज्ञानमें (तह)
तथा (दसणे) दर्शनमें (चरित्ते) चारित्रमें (सुय) सूत्रमें [वा] (सामाइय) सामायिकमें शका-
दि करी हो और (तिण्ह गुत्तीणं) त्रिगुप्तियोंको जैसे कि-मनगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति सम्यक्
न पालन की हो (चउण्हं कसायाणं) चार कषायोंको दूर न किया हो जैसे-क्रोध मान माया
लोभ (पचण्हं महव्वयाणं) पाच महाव्रत सम्यक् प्रकारसे धारण न किये हों जैसे कि अहिंसा १
अमृषा २ दत्तादान ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ (छण्हं जीवनिकायाण) षट् जीवनिकायकी रक्षा न
करी हो (सत्तण्ह पिंडेसणाण) सप्त आहारकी एषणाको न ग्रहण किया हो (अठण्हं पवयण-
माउणं) अष्ट प्रवचन माताका पालन न किया हो जैसे ५ समित ३ गुप्ति (नवण्ह बंभचेर गु-
त्तिणं) नव ब्रह्मचर्यकी गुप्तियोंको न धारण किया हो (दसविहे समणधम्मे) दशविधके श्रमण-
धर्मको भी न पालन किया हो तथा (समणाण) श्रमणोंके (जोगाण) योग्य क्रियाओंको (जखं-
डिय) यदि खंडित किया हो (जविराहिय) जो विराधन किया हो (जो मे देवसि) जो मेरे

पूर्वोक्त दिन सम्बन्धि (अइयारो कउ) अतिचार किये हुए है (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) उस पापको मै मिथ्या रूप मानता हूं ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह वर्णन है कि जो दिनमें किये हुए अतिचार है जैसे कि—मनके द्वारा किये हुए वा वचनसे वा कायासे तथा ज्ञान दर्शन चारित्रमें जो अतिचार लगा हो अथवा त्रि गुप्ति,चार कषाय, पच महाव्रत, षट् जीवनिकाय, *सप्त पिंडेषणा,अष्ट प्रवचन माता,नव ब्रह्मचर्यकी गुप्तिया, दशविध मुनिधर्म इनको यथायोग्य धारण न किया हो तो मै अपनी भूल मानता हूं॥

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् इरिया वहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरिया वहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसाउत्तिंग पणगदग मट्टीमक्कडा सत्ताणा संक्कमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया सघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणा

* सप्त पिंडेषणाका स्वरूप श्री आचाराग सूत्रके द्वितीय श्रुतके प्रथमाध्यायमे देखो ॥

उठाण सकामिया जीवियाउ ववरोविया जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ–(इच्छाकारेण) आपकी इच्छापूर्वक (सादिसह) वा आपकी आज्ञा-तुमार (भगवन्) हे महा भाग्यवान् (इरिया वहिय) जो चलनेके समय हिंसादि क्रिया हुई है सो तिन क्रियासे मैं (पडिक्कमामि) पीछे हटता हू अर्थात् हिंसादि क्रियाओंसे निवर्तता हू। गुरु कहने लगे (पडिक्कमह) हे शिष्य! सावद्य क्रियायोंसे शीघ्र ही पीछे हटो अर्थात् सावद्य कर्मको छोडो तब शिष्यने कहा (इच्छं) आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है और मैं भी यही (इच्छामि) इच्छा करता हू और (इरिया वहियाए) मार्गमें चलत समय जो मेरेसे विना उपयोग (विराहणाए) विराधना हुई हो अर्थात् विना उपयोग चलते समय किसी भी जीवकी विराधना जेकर हुई हो तो मैं उस विराधनासे (पडिक्कमिउ) निवर्तता हूं क्योंकि विराधना (गमणागमणे) आने जानेसे ही होती है अर्थात् योगोंका अस्थिर होना ही जीवोंकी विराधनाका कारण है (पाणक्कमणे) प्राणियोंके उपर आक्रमण हो गया हो, इसी प्रकार (बीयक्कमणे) बीजोंके ऊपर (हरियक्कमणे) हरि [अर्थात् वनस्पतिक] उपर (उसा) ओसपर (उत्तिग) कीडियोंके भवनपर (पणग) पाच प्रकारकी वनस्पतिके ऊपर (दग) पाणी (मट्टी) वा सचित्त मृत्तिका [अर्थात् निगाद]

के ऊपर (मक्कडा) कोई जीव विशेष (संत्ताणा) वा जालोपरि (संक्कमणे) आक्रमण हुआ हो (जे) जा कोई (म) मेरेसे (जीवा) जीवोंका उक्त विधिसे नाश हुआ हो जैसे कि–(एगिंदिया) एकेन्द्रिय जीव, पृथ्वी, जल [पानी], अग्नि, वायु, वनस्पति, (वेइंदिया) द्वींद्रिय जीव, जैसे गड़ोलादि (तेइंदिया) त्रीन्द्रिय जीव या तीन इन्द्रियवाले जीव जैसे–कुंथुवा, जू, लीखादि (चउरिंदिया) चतुरिंद्रिय जीव जैसे मच्छर आदि [पंचिंदिया] पचेंद्रिय जीव जैसेकि जलचर, थलचर, खेचर, सर्व ज्ञातिके पाच इंद्रियवाले इत्यादि जीवोंकी विराधनाके कारण शास्त्रकार वर्णन करते है जैसेकि–(अभिहया) सन्मुख आते हुए जीव विना उपयोग पीड़ित हुए हों (वत्तिया) रजसे आच्छादित हो गये हों (लेसिया) भूमिकामे मसले गए हों (संघाइया) परस्पर एकत्व किए हों (संघट्टिया) परस्पर सघट्टित किए हों (परियाविया) परितापना उन जीवोंको हुई हो (किलामिया) वा क्लान्त किये हो (उद्दविया) अथवा उपद्रव उन जीवोंको किया हो वा (ठाणा उठाणं) एक स्थानसे दूसर स्थानों पर (संकामिया) संक्रमण किया हो वा (जीवियाउ) जीवकी जो आयु है (ववरोविया) उससे व्यवरोपित हुए हों अर्थात् वे जीव मृत्यु हो गए हो (जो मे देवसि अइयार कओ) जो मैने दिन सम्बन्धि अतिचार किये है (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) उन अतिचार रूप पापोंसे मै पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—इस सूत्रमें यह वर्णन है कि—यदि गमनागमन करते हुए विना उपयोग एकेन्द्रिय जीवोंसे लेकर पचेन्द्रिय पर्यन्त किसी भी जीवकी विराधना हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं देवे अर्थात् आगेको फिर एसा कभी न करे; और इस पाठमें यह भी दिखलाया गया है कि जीवोंकी जातिको सम्यग् प्रकारसे ज्ञात करे, यदि ज्ञाति ज्ञान न हो तो पीछे इतना पापकर्मसे असभव होगा इसलिये यह पाठ ध्यानके लिए परम उपयोगी है ॥

इच्छामि पडिक्कमिउ पगाम सिज्जाए निगाम सिज्जाए संथारा उवत्तणाए परियट्टणाए आउट्टणाए पसारणाए छप्पया संघट्टणाए कुईए कक्कराईए छीए जभाइए आमासे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए सोयणवत्तिआए इत्थोविप्परिआसिआए दिट्ठीविप्परिआसिआए मणविप्परिआसिआए पाणभोयण विप्परिआसिआए जो मे देवसिउ अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(इच्छामि पडिक्कमिउं) हे भगवन्! मै इच्छापूर्वक दिनक अतिचारोसे निवर्तता हूं—जैसेकि—(पगाम सिज्जाए, निगाम सिज्जाए) सुखपूर्वक शय्यासे, अर्थात् किसी

ऐसे सुन्दर स्थानमें जहां शीतल पवन आती हो और भूमि जलसिञ्चित किया हुआ हो, प्रमाणसे अधिक वस्त्रों द्वारा सकोमल बनाई गई हो ऐसी शय्याको निगाम शय्या अथवा प्रकाम शय्या कहते है, सो मै निवृत्ति करता हू ऐसी शय्या बनानेसे तथा उसपर शयन करनसे, तथा (संथारा उवत्तणाए) संस्तारक पर [आसन पर] शरीरको विना पूंछे परिवर्तन करनेसे अर्थात् कर्वट लेनेसे। यहा पर समस्त पदोंके साथ "निवृत्ति करता हूं" यह पद स्वय जोड़ लेने चाहिये। (परियट्टणाए) वारम्वार विना पूंछे परिवर्तन करनेसे (आउट्टणाए पसारणाए) विना पूंछे अंगोपांग संकोचने और पसारनसे (छप्पगा सघट्टणाए) जूं आदि षट्पदोंके स्पर्शसे (कुईए) मध्यरात्रीमें उंचे स्वरसे भाषण करनेसे तथा मुंहपत्तिको विना बाधे भाषण करनेसे (ककराईए) कामभोगोंकी आशासे दुःखित होकर आर्त ध्यान करनेसे (छीए जंभाईए) विनायत्न छींक तथा उवासी लेनेसे (आमोसे) विना प्रमार्जन किये कण्डु [खुजली] करनेसे (ससरक्खामासे) सचित्त रज करके युक्त वस्त्रादिका आमर्षण करनेसे (आउलमाउलाए) मनको आकुल व्याकुल करनेसे (सोयणवत्तिआए, इत्थीविप्परिआसिआए) स्वप्नावस्थामें स्त्री पर विपरीत भाव अर्थात् अनुराग करनेसे (दिट्ठीविप्परिआसिआए मणविप्परिआसिआए) दृष्टि तथा मनको विपरीत करनेसे (पाणभोयण विप्परिआसिआए) पानी व भोजन

पर विपरीत भाव आनेसे, इत्यादि (जो मे देवसिउ अइयार कउ तस्स मिच्छामि दुक्कडं) जो मैने दिन सम्बन्धि अतिचार किये है, उनसे पीछे हटता हू ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह वर्णन है कि साधु ऐसी शय्यादि न सेवन करे, जिससे अति निद्रा और उन्माद प्राप्त हो, और निद्रामें अगोपाग विनायत्न न सकोचे न पसारे और न परिवर्तन लेवे। अपितु यदि स्वप्नावस्थामें किसी प्रकारसे विकृति भाव उत्पन्न हुआ हो अथवा मन और दृष्टिमें किसी प्रकार विपरीतता आई हो, तो उसकी आलोचना करे, और उस पापसे पीछे हटे ॥

पडिक्कमामि गोअर चरीआए, भिक्खारिआए, उघाड कवाड उघाडणाए, साणा वच्छा दारा संघट्टणाए, मंडीपाहुडीआए, बलिपाहुडीआए, ठवणापाहुडीआए, संकीए सहसागारीए, अणेसणाए, पाणेसणाए, पाणभोयणाए, वीयभोयणाए, हरिय भोयणाए, पच्छाकम्मिआए, पुरेकम्मिआए, अदिठहडाए, दगसंसठ्ठहडाए, रयसंसठ्ठहडाए, पारिसाडणिआए, पारिठावणिआए, उद्दासणभिक्ख ए, जंउग्गमेण, उप्पायणेसणाए अप्परिसुद्धं पडिग्गहियं परिभुत्त वा ज न परिठवियं जो मे देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कड॥

हिंदी पदार्थ—(पडिक्कमामि) मै पीछे हटता हूं, यह पद समस्त पदोंके अतमें जोड लेना चाहिए (गोअर चरीआए) गौका यह स्वभाव है कि वह तृणोंको जड़ोंसे नही उखाडती, प्रत्युत उपरसे ही तोडकर अपना उदर पूर्ण कर लेती है, इसी प्रकार साधु भी किसी एक ही घरसे पर्याप्त आहार न लेकर प्रत्येक घरमें भ्रमण करके थोडा २ भोजन लेते है, ऐसी वृत्तिका नाम गोचरी है, सो यदि गोचरीमें कोई दोष लगा हो तो मै उससे पीछे हटता हूं। ऐसे ही (भिक्खागिआए) भिक्षाके लिए फिरते हुए यदि कोई अतिचार लगा हो तो मै उससे पीछे हटता हू। (उघाड कवाड उघाडणाए) विनायत्न कपाटोंको उद्घाटन करनेमे अर्थात् खोलनेसे (साणा वच्छा दारा संघट्टणाए) श्वानों [कूकर], वछड़ों, और वालकोंको उल्लंघन करके भिक्षाके लिए प्रवेश करनेसे, (मंडी पाहुडीआए) अग्नि पिंडमेंसे आहार लेनेसे, (वलिपाहुडीआए) यज्ञादिके निमित्त रखे हुए अन्नको लेनेसे, (ठवणापाहुडीआए) जो भिक्षुओंके वास्ते स्थापन किए हुए अन्नको ग्रहण करनेसे (सकीए) सदेहवाला भोजन लेनेसे (सहसागारीए) विना उपयोग अकस्मात् दोषयुक्त आहार लेनेसे (अणेसणाए) अकल्पनीय अर्थात् साधुवृत्तिसे विरुद्ध भोजन लेनेसे मै पीछे हटता हू। यदि (पाणेसणाए) पानीकी एषणा पूर्ण रीतिसे न करी हो तो मै इस अतिचारसे निवर्तता हू। इससे आगे अन्य पदोंके अन्तमें "निवर्तता हूं" इस क्रियाका अभियोग

करना चाहिए जैसे–(वीयभोयणाए, हरियभोयणाए) वीज तथा वनस्पति (सब्जी=हरि) से मिश्रित भोजन किया हो (पच्छाकम्मिआए, पुरेकम्मिआए) जिस वस्तुके ग्रहण करने पर पीछे अथवा पहिले दोष लगनेकी संभावना हो उससे, (अदिठ्ठहडाए) अदृष्ट वस्तु ग्रहण करनेसे (दगसंसठ्ठहडाए, रयससठ्ठहडाए) जीवसहित अर्थात् सचित्त जल और मिट्टीसे युक्त आहार लेनेसे (पारिसाडणिआए) जो आहार लेते समय गिरता हो, अथवा जो भोजन गेरनेमें अधिक और काममें स्वल्प आता हो ऐसा लेनेसे (पारिठावणिआए) विनाकारण आहारको परिष्ठापन करनेसे [गेरनेसे] (उहासणभिक्खाए) भोजनशालासे अतिरिक्त किसी अन्य स्थानमें प्रथम ही गृहस्थोंको पूछना कि तुम्हारे अमुक वस्तु है ऐसे पूछकर फिर आहार ग्रहण करना सो इस प्रकार करनेसे, क्योंकि ऐसा करनेसे दोषकी सभावना होती है (जंउग्गमेण, उप्पायणेसणाए) षोडश अर्थात् सोला उद्गमन और सोला उत्पातन दोषोंसे युक्त आहार लेनेसे मै निवर्तता हूं।(अप्परिसुद्ध, पडिग्गाहिय, परिभुत्तं वा) सदेहादि दश दोषों करके युक्त आहार ग्रहण किया हो अथवा भोगा हो, (ज न परिठविय) जो गेरनेयोग्य है उसको न गेरा हो(जो मे देवसिउ अइयार कउ, तस्स मिच्छा मि दुक्कड) जो मैने दिन सम्बन्धि अतिचार किये है, उनसे पीछे हटता हू ॥

भावार्थ–उक्त सूत्रका यह तात्पर्य है कि साधु जिस समय गोचरी लेकर अपने स्थान-

पर आ जाए, तो पूर्वोक्त सूत्रानुसार अवश्यमेव आलोचना करे कि मैंने कहीं पर दोषयुक्त आहार तो नहीं लिया अथवा यदि मैंने अनभिज्ञतासे ले लिया है तो खा तो नही लिया, यदि ऐसा विचार करने पर निर्णय हो जावे कि मुझे दोष लगा है तो उस दोषका दण्ड लवे, और आगेको ऐसा दोष न करनेकी प्रतिज्ञा करे ॥

पडिक्कमामि चउकाल सज्झायस्स अकरणयाय, उभउ कालं भंडोवगरणस्स अपडिलेहणाए, दुप्पडिलेहणाए, अप्पमज्जणाए, दुप्पमज्जणाए, अइक्कमे वइक्कमे, अइयारे, अणायारे, जो मे देवसिउ अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ–(पडिक्कमामि चउकालं सज्झायस्स अकरणयाय) सूत्रोंमें श्री भगवन्त महावीरजीने प्रतिपादन किया कि–अनध्यायी कालको वर्जकर शेष समस्त कालमे भिक्षु स्वाध्याय किया करें, सो यदि मैंने उक्त आज्ञाको उलघन किया हो अर्थात्–चार कालमें [दिनके पूर्वाह्न तथा अपराह्नमें और रात्रिके पूर्वाह्न तथा अपराह्नमे] स्वाध्याय न किया हो तो मै उस लगे हुए अतिचार रूप दोषसे निवृत्त होता हूं । इसी प्रकार (उभउ कालं भंडोवगरणस्स अपडि-

लेहणाए दुप्पडिलेहणाए) दोनों कालमें [प्रातःकाल और सायकालमे] भंडोपकरणकी प्रतिलेहणा न की हो, यदि की हो तो शास्त्रविहित रीतिसे न की हो, तथा (अप्पमज्जणाए दुप्पमज्जणाए) प्रमार्जन न किया हो अथवा दुष्ट प्रकारसे प्रमार्जन किया हो, तो इसमें लगे हुए अतिचाररूप पापसे मै पीछे हटता हूं। (अइक्कमे, वइक्कमे) मन करके साधु वृत्तिको खंडित किया हो अथवा वचन करके खंडित किया हो और (अइयारे) अतिचार लगा हो तथा (अणायारे) अनाचार लगा हो, इत्यादि पापोंसे [दोषोसे] (जो मे देवसिउ अइयारो कउ) जो मैने दिन सम्बन्धि अतिचार किए है (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) उनसे मैं पीछे हटता हू॥

भावार्थ—साधु इस वातका पश्चात्ताप करे, कि यदि मैंने अकालमें स्वाध्याय किया हो, और कालमें न किया हो, तथा दोनों समय भांडोपकरणकी विधिपूर्वक प्रतिलेखना न की हो, और व्रतोंमें अतिचार अथवा अनाचार लगे हों, तो मै मिच्छामि दुक्कडं ग्रहण करता हू। पुनः निम्न लिखित स्ववृत्तिको अन्वेपण करे, तथा हेय—त्यागने योग्य, ज्ञेय—जानने योग्य, और उपादेय—ग्रहण करने योग्य पदार्थोंको यथावत् ज्ञात करके उसी प्रकार सेवन करे॥

पडिक्कमामि एगविहे असंजमे, पडिक्कमामि दोहिं वंधणेहिं रागवंधणेणं दोसवंधणेणं, पडिक्कमामि तिहिंदंडेणं मणदडेणं वयदडेणं कायदडेणं, प-

डिक्कमामि तिहिगुत्तीहिं मणगुत्तीएहिं वयगुत्तीएहिं कायगुत्तीएहिं, पडिक्कमामि तिहिंसल्लेहिं मायासल्लेणं निआणासल्लेण मिच्छादंसणसल्लेणं, पडिक्कमामि तिहिंगारवेहि इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेण, पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए दंसणविराहणाए चरित्तविराहणाए॥

हिंदी पदार्थ—(पडिक्कमामि एगविहे असजमे) एक प्रकारके असंयमसे निवृत्त होता हूं। (पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेण दोसबंधणेणं) मैं दो प्रकारके बन्धनोंसे—अर्थात् राग और द्वेष रूपी बन्धनोंसे पीछे हटता हूं। (पडिक्कमामि तिहिं दंडेण, मणदंडेणं, वयदंडणं, कायदंडेणं) जिस कारणसे आत्मासंसार सागरमें परिभ्रमण करे, उसे दंड कहते हैं—सो मैं तीनों दंडोंसे अर्थात् मन वचन और कायके दंडोंसे निवृत्ति करता हूं। (पडिक्कमामि तिहिंगुत्तीहिं मणगुत्तिएहिं, वयगुत्तिएहिं, कायगुत्तिएहिं) मैं तीन प्रकारकी अगुप्तियोंसे [मन, वचन, काय, इन तीन अगुप्तियोंसे] पीछे हटता हूं और तीन गुप्तियोंको धारण करता हूं (पडिक्कमामि तिहिंसल्लेहिं मायासल्लेणं, निआणासल्लेण, मिच्छादंसणसल्लेण) मैं तीनो शल्योंसे पीछे हटता हूं, अर्थात् छल करनेसे, अपने तप संयमादिके प्रभावकी इच्छा करनेको निआणा कहते हैं, उससे, और

मिथ्या दर्शन शल्यसे निवृत्ति करता हूं। (पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं, इड्ढीगारवेणं, रसगारवेणं, सायागारवेण) तीन प्रकारके गर्वोंसे [अहंकारोंसे] जैसेकि-ऋद्धिके गर्वसे, रसके गर्वसे और साताके गर्वसे पीछे हटता हूं। (पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं, नाणविराहणाए, दसणविराहणाए, चरित्त विराहणाए) मैं तीन प्रकारकी विराधनाओंसे अर्थात् ज्ञानकी विराधनासे, दर्शनकी विराधनासे और चारित्रकी विराधनासे पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें मुनियोंके नियमों अथवा गुणोंका वर्णन किया गया है कि-मुनि असंयमसे पीछे हटे, और राग द्वेषरूपी बन्धनोंका छेदन करे, तथा तीन दडोसे निवृत्ति करके तीन गुप्तिओंको धारण करे, और इस प्रकार मुनियोंको तीन शल्यों तथा तीन गर्वों और तीन विराधनाओंसे भी भिन्न रहना चाहिये अर्थात् इनको छोडना चाहिये ॥

पडिक्कमामि चउहिं कसायहिं, कोहकसाएणं, माणकसाएणं मायाकसाएण, लोभकसाएणं। पडिक्कमामि चउहिं सन्नाहिं, आहारसन्नाए, भयसन्नाए, मेहुणसन्नाए, परिग्गहसन्नाए। पडिक्कमामि चउहिं विकहाहिं, इत्थीकहाए, भत्तकहाए, देसकहाए, रायकहाए। पडिक्कमामि चउहिं ज्झाणेहिं अट्टेण ज्झाणेणं, रुद्देण ज्झाणेण, धम्मेण ज्झाणेणं, सुक्केण ज्झाणेणं ॥

हिंदी पदार्थ—(पडिक्कमामि चउहिं कसायहिं) मै चार कषायोसे पीछे हटता हूं अर्थात् जिस करके संसारमें दीर्घकाल पर्यंत पर्यटन करना पड़े, उसे कषाय कहते है सो (कोहकसाएणं, माणकसाएण, मायाकसाएणं, लोभकसाएणं) क्रोध, मान, छल और लोभ इन चारो कषायोंसे मै मुक्त होता हूं। (पडिक्कमामि चउहिं सन्नाहिं) मै चार प्रकारकी सज्ञाओंसे निवृत्ति करता हूं—अर्थात् (आहारसन्नाए) आहारकी संज्ञासे, (भयसन्नाए) भयकी सज्ञासे, (मेहुणसन्नाए) अब्रह्मचर्यकी सज्ञासे और (परिग्गहसन्नाए) परिग्रहकी संज्ञासे मै निवृत्ति करता हूं। (पडिक्कमामि चउहिं विकहाहिं—इत्थीकहाए, भत्तकहाए, देसकहाए, रायकहाए) स्त्री विकथा, खानपानकी विकथा, देशविकथा और राजविकथासे पीछे हटता हूं। (पडिक्कमामि चउहिं ज्झाणेणं, अट्टेणं ज्झाणेणं, रुद्देण ज्झाणेणं, धम्मेण ज्झाणेण, सुक्केण ज्झाणेण) ध्यान चार प्रकारका होता है—आर्त्त, रौद्र, धर्म, और शुक्ल—सो मैं पहिले दोनोंसे निवृत्ति करता हूं, और पिछले दो धारण करनेकी भावना करता हूं ॥

भावार्थ—मुनि धर्मध्यान और शुक्लध्यानको प्रतिदिन धारण करे तथा कषाय, संज्ञा, विकथा और आर्त्त रौद्र ध्यान इनको त्याग दे ॥

पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं, काइयाए, अहिगरणियाए, पाउसियाए,

परित्तावणियाए, पाणाइवाय किरियाए। पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं, सद्देणं, रूवेण, गंधेणं, रसेणं, फासेण। पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं, सव्वाउ पाणाइवायाउ वेरमणं, सव्वाउ मुसावायाउ वेरमणं, सव्वाउ अदिन्ना-दाणाउ वेरमण, सव्वाउ मेहुणाउ वेरमणं, सव्वाउ परिग्गहाउ वेरमणं। पडि-क्कमामि पंचहिं समिइयहिं, इरियासमिइय, भासासमिइय, एसणासमिइय, आयाण भडमत्त निक्खेवणासमिइय, उच्चारपासवण खेल्ल जल्ल मल्ल सिंघाण पारिठावणिया समिइय ॥

हिंदी पदार्थ–(पडिक्कमामि पचहिं किरियाहिं) मैं पाच क्रियाओंसे पीछे हटता हूं, (काइयाए, अहिगरणियाए, पाउसियाए, परित्तावणियाए, पाणाइवाय किरियाए) कायाकी क्रियासे, अधिकरण क्रियासे, प्रद्वेष क्रियासे, परितापना क्रियासे, और प्राणातिपात क्रियासे, मैं निवृत्त होता हूं। (पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं–सद्दण, रूवेण, गधेण, रसेण, फासेण) मैं पांच कामगुणोंसे अर्थात्–शब्द, रूप, गध, रस, और स्पर्शसे पीछे हटता हू। (पडिक्कमामि

पंचहिं महव्वएहिं) यदि पांच महाव्रतोंके विषयमें कोई अतिचार लगा हो तो उससे मैं निवृत्ति करता हू (सव्वाउ पाणाइवायाउ वेरमण, सव्वाउ मुसावायाउ वेरमणं, सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं, सव्वाउ मेहुणाउ वेरमण, सव्वाउ परिग्गहाउ वेरमणं) प्राणातिपात–हिंसासे, मृषावाद–झूटसे, अदत्तादान–चौर्य कर्मसे, मैथुन कर्मसे, और परिग्रहसे निवृत्ति करता हूं । (पडिक्कमामि पंचहिं समिइयहिं) यदि पाच प्रकारकी समितिमें कोई दोप लगा हो तो उससे मै निवृत्ति करता हूं–जैसेकि–(इरियासमिइय) चलते फिरते विना उपयोग जीवोंकी हिंसा हुई हो (भासासमिइय) भाषा समितिमें कोई दोप लगा हो (एसणासमिइय। एपणा समितिमें अर्थात् आहार ग्रहण करनेमें अतिचार लगा हो (आयाण भंडमत्त निक्खेवणासमिइय) भाडोपकरणके ग्रहण करने तथा रखनेमें दोप लगा हो, उच्चारपासवण खेलजल्ल मल्ल सिंघाण पारिठावणिया समिइय) विष्ठा, मूत्र, श्लेष्मण, जल, मल, नासिका मल आदिको परिष्ठापन करने पर कोई अतिचार लगा हो तो, इस प्रकार पांच समितिके विषयमें यदि कोई दोप लगा हो तो मै उससे पीछे हटता हू ॥

भावार्थ–कायसे दुःप्रयोग करनेको कायिक क्रिया कहते है, शस्त्रादिके एकत्र करने अथवा क्रोधादिके करनेमे जो कर्मोंका बन्ध होता है उसे अधिकरण कहते है, द्वेप करनेसे जो कर्म आते है उसे प्रद्वेप क्रिया कहते है, किसी आत्माको परिताप अथवा संतापसे पीड़ित कर-

नेको परितापनीय क्रिया कहते है, और जीवोंका वध करनेसे अर्थात् हिंसा करनेमें जो क्रिया होती
है उसे प्राणातिपात क्रिया कहते हैं। इस प्रकार पाच क्रियाओसे मैं निवृत्ति करता हू। और
पाच कामगुणोंका-शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श आदिको छोड़कर पाच महाव्रतोंको (अ-
हिंसा, सत्य, दत्त, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदिको) सम्यक् प्रकारसे धारण करता हूं। यदि
पाच समितिके विषयमें कोई दोष लगा हो तो उसकी आलोचना करता हूं॥

पडिक्कमामि छहिं जीवनिकायहिं पुढवीकायण, आउकायणं, तेउकायणं, वाउकायण, वणस्सइकायणं, तस्सकायणं। पडिक्कमामि छहि लेसाहिं किण्ह-लेसाए, नीललेसाए, काउलेसाए, तेउलेसाए, पम्हलेसाए, सुक्कलेसाए॥

हिंदी पदार्थ-(पडिक्कमामि छहिं जीवनिकायहिं) समस्त जीवोंकी उत्पत्तिके छे स्थान
है जिनको षट्काय कहते है, सो मैने यदि छै कायके जीवोंकी विराधना की हो तो उससे पीछे
हटता हू-जैसाकि-(पुढवीकायण, आउकायण, तेउकायण, वाउकायण, वणस्सइकायण, तस्स-
कायण) अर्थात् पृथिवीकाय, अप्काय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकायकी
विराधनासे पीछे हटता हूं। (पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं) मैं छे प्रकारकी लेश्यासे पीछे हटता हूं-

यथा-(किण्हलेसाए, नीललेसाए, काउलेसाए) कृष्णलेश्यासे, नीललेश्यासे और कापोतलेश्यासे, (तेउलेसाए, पम्हलेसाए, सुक्कलेसाए) तेजलेश्या पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या इन तीन लेश्याओंको धारण न करनेसे जो दोष लगा हो उससे निवृत्ति करता हूं अर्थात् षट् लेश्याओंमेंसे पहली तीन लेश्या त्यागनी चाहिये और पिछली तीन धारण करनी चाहिये ॥

भावार्थ-मूल सूत्रमें यह विवर्ण है कि-साधु षट्कायकी हिंसासे निवृत्ति करे, फिर तीन अशुभ लेश्याओंका (कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्याका) परिहार करे। और तीन शुभ लेश्याओंको धारण करे अर्थात् तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याका ग्रहण करे। लेश्या मनके परिणामों (भावों) का नाम है सो पहली तीन लेश्याओंमें दुष्ट भाव होते हैं इसलिये उसे अधर्म लेश्या भी कहते है तथा वे त्याज्य है, और पिछली तीन लेश्याओंमें शुभ संकल्प उत्पन्न होनेसे उन्हें धर्म लेश्या कहते है अतः वे ग्रहण करने योग्य है ॥

इससे आगे जितने पाठ आयेंगे उनमें विशेष करके हेय (त्यागने योग्य) ज्ञेय (जानने योग्य) और उपादेय (ग्रहण करने योग्य) का ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि ये समस्त पाठ संमिलित हैं ॥

सत्तहिं भयठाणेहिं, अट्ठहिं मयठाणेहिं, नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं, दसविहे

समणधम्मे, एकारसहिं उवासग पडिमाहिं, वारसहिं भिक्खू पडिमाहिं, तेरसहिं किरियाठाणेहिं, चउदसहिं भूयगामेहिं, पन्नरसहिं परमाहम्मीहिं, सोलस्सहि गाहासोलस्सहिं, सत्तरस्सविहे असंजमे, अठारस्सविहे अवभेहि, इगुणवीसाए नायझाणेहिं, वीसाए असमाहिठाणेहिं, एगवीसाए सबलेहिं, वावीसाए परीसहेहिं, तेवीसाए सुयगड अज्झयणेहिं, चउवीसाए देवेहिं, पणवीसाए भावणाहिं, छवीसाए दसाकप्प ववहाराण उद्देसण कालेणं, सत्तावीसाए अणगार गुणेहिं, अठावीसाए आयारपकप्पेहिं, एगुणतीसाए पावसुयपसगेहि, तीसाए मोहणिय ठाणेहिं, एगतीसाए सिद्धायगुणेहिं, बत्तीसाए जोगसग्गएहिं, तेत्तीसाए आसायणाएहि ॥

हिंदी पदार्थ—(पडिक्कमामि सत्तहि भयठाणेहिं) मै सात भयस्थानकोंसे निवृत्ति करता हू, (अठहि मयठाणेहिं) आठ मद उत्पादक स्थानोंको छोड़ता हू (नवहिं बभचेरगुत्तीहिं) नव प्रकारकी ब्रह्मचर्य गुप्तियोंको धारण करता हू और नव ब्रह्मचर्यकी अगुप्तियोंमे पीछे हटता हू

(दसविहे समणधम्मेहिं) यदि दश प्रकारके श्रमण धर्मसे कदाचित् स्खलित हो गया हूं, तो उसकी आलोचना करके उनको पुनः धारण करता हू (एगारसहिं उवासग पडिमाहिं) यदि श्रावककी एकादश प्रतिमाओंकी शुद्धतापूर्वक प्ररूपणा व्याख्या न करी हो तो उसमें लगे दोषोंसे पीछे हटता हूं (वारसहिं भिक्खू पडिमाहिं) भिक्षुकी द्वादश प्रतिमाएँ यथावत् प्रतिपादन न की हों, तो उनमें लगे हुए अतिचारसे निवृत्ति करता हूं। इसी प्रकार आगे भी प्रत्येक पदके साथ "निवृत्ति करता हू" अथवा "उसमें लगे अतिचारसे पीछे हटता हूं" ऐसी योजना स्वयमेव करना चाहिये। (तेरसहिं किरियाठाणेहिं) त्रयोदश प्रकारके क्रियास्थानोंमें यदि उनका परिहार न किया हो, (चउदसहिं भूयगामेहिं) यदि चतुर्दश प्रकारके भूतग्रामोंकी हिंसा की हो (पन्नरसहिं परमाहम्मीहि) यदि पंचदश प्रकारके परमाधर्मियोंकी प्ररूपणा न करी हो, (सोलसहिं गाहासोलसहिं) यदि श्री सूयगडांग सूत्रके षोडश अध्यायोंकी स्वाध्याय न की हो (सत्तरसविहे असंजमेहिं) सप्तदश प्रकारके असंयमसे (अट्ठारसविहे अबंभेहिं) अष्टादश प्रकारके अब्रह्मचर्यसे, (इगुणवीसाए नायज्झाणेहिं) यदि श्री ज्ञाताजी सूत्रके उन्नीस अध्यायोंका स्वाध्याय न किया हो. (वीसाए असमाहि ठाणेहिं) वीस प्रकारके असमाधिकारक स्थानोंसे (एगवीसाए सवलेहिं) एकविंशति सबल दोषोंसे निवृत्ति करता हू तथा (बावीसाए परिसहेहिं) यदि

वाइस प्रकारके परिषह सम्यक्तया न धारण करे हों, (तेवीसाए सूयगड अज्झयणेहिं) त्रयविंशति श्री सूयगडांग सूत्रके अध्यायोंकी स्वाध्याय न की हो (चउवीसाए देवेहिं) यदि चतुर्विंशति तीर्थंकरोंकी प्ररूपणा न की हो, (पणवीसाए भावणाएहिं) यदि पंच महाव्रतोंकी पंचविंशति प्रकारकी भावना अंगीकार न करी हों (छवीसाए दसाकप्प ववहाराण) यदि मैंने छवीस अध्यायोंकी सम्यक् प्रकारसे स्वाध्याय न की हो अर्थात् श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्रके दश उद्देश है, तथा श्री व्यवहार सूत्रके भी दश उद्देश है और श्री बृहत्कल्पसूत्रके षट् उद्देश है ये सब मिलकर षट् विंशति [छवीस] उद्देश होते है, यदि इनको यथायोग्य पठन न किया हो, (सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं) मुनियोंके सप्तविंशति [सताईस] गुण यदि न धारण किये हों (अठावीसाए आयारपकप्पेहिं) यदि अष्टविंशति [अठाईस] प्रकारके आचार प्रकल्पकी प्ररूपणा न की हो (एगुणतीसाए पावसुयपसंगेहिं) एकोनत्रिंशत् [उनतीस] प्रकारका पापश्रुत होता है सो यदि उनका प्रचार किया हो (तीसाए मोहणियठाणेहिं) जिन तीस स्थानों पर मोहनीय कर्म बन्धा जाता है जिससे महाकर्मोंकी उत्पत्ति होती है, सो यदि इनसे पीछे हटनेका उपदेश न किया हो (एगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं) एकतीस विधिके सिद्धोंके गुणोंकी प्ररूपणा न की हो (बत्तीसाए जोगसंगहेहिं) द्वात्रिंशत् योगसंग्रह सम्यक् प्रकारसे आसेवन न किये हों और (ते-

त्तीसाए आसायणाएहिं) यदि तेतीस आशातनाएँ सेवन की हो तथा पूर्वोक्त स्थानोंसे निवृत्ति करता हूं–और उन्हें सम्यक् रीतिसे धारण करनेकी प्रतिज्ञा *करता हूं ॥

भावार्थ–सप्त भयस्थानोंसे लेकर तेतीस आशातना पर्यंत इन अंकोंमें जो जो त्यागने योग्य है उनका मुनि त्याग करे। जो जानने योग्य है उनको जाने, और जो आदरणीय है उनको ग्रहण करे, तथा आदरणीयके ग्रहण न करनेसे जो दोष लगे हों उनका पश्चात्ताप करके उनसे शुद्ध होवे ॥

अरिहंताणं आसायणाए, सिद्धाणं आसायणाए, आयरियाणं आसायणाए, उवज्झायाणं आसायणाए, साहुणं आसायणाए, साहुणीणं आसायणाए, सावयाणं आसायणाए, सावियाणं आसायणाए, देवाणं आसायणाए,

* पाठक महाशयोंको योग्य है कि–इस स्थानपर हेय, ज्ञेय, और उपादेयका भली भाति ध्यान रक्खे, क्योंकि इन तेतीस अंकोंमे ये तीनो ही बाते गर्भित हैं। कहीं कोई पाठ हेय अर्थात् छोडने योग्य है, कहीं कोई पाठ ज्ञेय जानने योग्य है, और कहीं कोई पाठ ग्रहण करने योग्य है तथा इनका सविस्तार स्वरूप श्री समवायांगजी सूत्रसे देखना चाहिये ॥

देवीण आसायणाय, इह लोगस्स आसायणाय, परलोगस्स आसायणाय, केवलिपन्नतस्स धम्मस्स आसायणाय, सदेव मणुयासुरस्स लोगस्स आसायणाय, सव्वपाणभूयजीवसत्ताणं आसायणाय, कालस्स आसायणाय, सूयस्स आसायणाय, सुयदेवयाण आसयणाय, वायणारियस्स आसायणाय, जंवाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विनयहीणं, जोगहीण, घोसहीणं, सुट्ठुदिन्नं, दुट्ठुपडिछियं, अकाले कउ सज्झाउ, काले न कउ सज्झाउ, असज्झाइए सज्झाय, सज्झाइय न सज्झायं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ–(अरिहताण आसायणाय) अरिहंतोंकी आशातना की हो अर्थात् अरिहंत पदको न मानना वही अरिहतोंकी आशातना है, इसी प्रकार–(सिद्धाण आसायणाय) सिद्धोंकी आशातना करी हो तथा (आयरियाण आसायणाय) आचार्योंकी आशातना की हो, अथवा उनकी आज्ञाको पालन न किया हो, (उवज्झायाण आसायणाय) उपाध्यायोंकी आशातना की हो, (साहुणं आसायणाय) मुनियोंकी आशातना की हो, (साहुणीणं आसायणाय)

सीसाए आसायणाएहि) यदि तेतीस आशातनाएँ सेवन की हो तथा पूर्वोक्त स्थानोंसे निवृत्ति करता हूं–और उन्हें सम्यक् रीतिसे धारण करनेकी प्रतिज्ञा *करता हूं ॥

भावार्थ–सप्त भयस्थानोंसे लेकर तेतीस आशातना पर्यंत इन अंकोमे जो जो त्यागने योग्य है उनका मुनि त्याग करे। जो जानने योग्य है उनको जाने, और जो आदरणीय है उनको ग्रहण करे, तथा आदरणीयके ग्रहण न करनेसे जो दोष लगे हों उनका पश्चात्ताप करके उनसे शुद्ध होवे ॥

अरिहंताणं आसायणाय, सिद्धाणं आसायणाय, आयरियाणं आसायणाय, उवज्झायाणं आसायणाय, साहुणं आसायणाय, साहुणीणं आसायणाय, सावयाणं आसायणाय, सावियाणं आसायणाय, देवाणं आसायणाय,

* पाठक महाशयोको योग्य है कि–इस स्थानपर हेय, ज्ञेय, और उपादेयका भली भाति ध्यान रक्खे, क्योंकि इन तेतीस अंकोंमे ये तीनों ही बाते गर्भित है। कहीं कोई पाठ हेय अर्थात् छोडने योग्य है, कही कोई पाठ ज्ञेय जानने योग्य है, और कहीं कोई पाठ ग्रहण करने योग्य हे तथा इनका सविस्तार स्वरूप श्री समवायागजी सूत्रमे देखना चाहिये ॥

देवीण आसायणाए, इह लोगस्स आसायणाए, परलोगस्स आसा...
केवलिपन्नतस्स धम्मस्स आसायणाए, सदेव मणुयासुरस्स लोगस्स आसा-
यणाए, सव्वपाणभूयजीवसत्ताणं आसायणाए, कालस्स आसायणाए, सूय-
स्स आसायणाए, सुयदेवयाण आसयणाए, वायणारियस्स आसायणाए,
जवाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीण, विनयहीणं, जोग-
हीणं, घोसहीणं, सुट्ठुदिन्न, दुट्ठुपडिछियं, अकाले कउ सज्झाउ, काले न कउ
सज्झाऊ, असज्झाइए सज्झाय, सज्झाइय न सज्झायं, तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

हिंदी पदार्थ–(अरिहताण आसायणाय) अरिहंतोंकी आशातना की हो अर्थात् अ-
रिहत पदको न मानना वही अरिहतोंकी आशातना है, इसी प्रकार–(सिद्धाणं आसायणाए)
सिद्धोंकी आशातना करी हो तथा (आयरियाण आसायणाए) आचार्योंकी आशातना की हो,
अथवा उनकी आज्ञाको पालन न किया हो, (उवज्झायाण आसायणाए) उपाध्यायोंकी आशा-
तना की हो, (साहुणं आसायणाए) मुनियोंकी आशातना की हो, (साहुणीणं आसायणाए)

साध्वियोंकी आशातना करी हो, (सावयाणं आसायणाय) श्रावकोंकी आशातना करी हो अर्थात् श्रावक पदको न मानना अथवा उनको निंदायुक्त वचन बोलना और उनको सामायिक तथा प्रतिक्रमणादि न सिखाना, यही श्रावकोंकी आशातना होती है, (सावियाणं आसायणाय) श्राविकाओंकी आशातना करी हो (देवाणं आसायणाय) देवोंकी [स्वर्गवासी जीवोंकी] आशातना की हो (देवियाणं आसायणाय) देवियोंकी आशातना करी हो, (इह लोगस्स आसायणाय) इस लोककी आशातना की हो, अर्थात् इस लोककी नास्ति करना, तथा लोकको ईश्वर कृत मानना, और सत्रूप पदार्थोंको असत्रूप अथवा असत्रूप पदार्थोंको सत्रूप मानना यही इस लोककी आशातना है क्योंकि–द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा यह लोक अनादि अनंत है और पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा सादि सान्त है, फिर (परलोगस्स आसायणाय) परलोककी आशातना की हो (केवलिपन्नतस्स धम्मस्स आसायणाय) केवलि भगवन्के प्रतिपादन किये हुए धर्मकी आशातना की हो (सदेव मणुयासुरस्सलोगस्स आसायणाय) देव, मनुष्य, और असुर कुमारादिके जो लोक हैं अर्थात् देवलोक, मनुष्य लोक और असुर लोक आदिकी आशातना करी हो (सव्वपाणभूयजीवसत्ताण आसायणाय) द्वीन्द्रियवाले प्राणियोंकी, वनस्पति आदि भूतोंकी, पंचेन्द्रिय आदि जीवोंकी, पृथिवी आदि सत्त्वोंकी यावत् इन सबकी आशातना की हो,

(कालस्स आसायणाए) तीनकालकी [भूत, भविष्यत्, वर्तमानकी] आशातना करी हो, (सुयस्स आसायणाए) श्रुतकी [सूत्रोंकी] आशातना की हो (सुयदेवयाए आसायणाए) श्रुतदेवो अर्थात् सूत्रकर्ताओंकी [तीर्थंकर महाराजोंकी] आशातना की हो, अथवा उनके अवगुणवाद भाषण किये हों, (वायणायरियस्स आसायणाए) वाचनाचार्यकी [अध्यापक वा उपाध्यायकी] आशातना करी हो, अथवा इनकी यथायोग्य सेवा न की हो, तथा (जंवाइद्धं) अनुक्रमपूर्वक न पढा हो, तथा अवासीके साथ पढा हो, अथवा विपरीत पठन किया हो (वच्चामेलियं) अन्य शास्त्रका पाठ अन्य शास्त्रमें मिला दिया हो, अर्थात् पाठको अधिक किया हो, (हीणक्खरं) श्रुतके मूल पाठसे अक्षर हीन करके पठन किया हो, (अच्चक्खरं) मूलसे अधिक अक्षर किये हों (पयहीणं) पदहीन पठन किया हो (विणयहीणं) विनयसे रहित पठन किया हो (जोगहीणं) शुद्ध योगोंसे रहित अध्ययन किया हो, (घोसहीणं) उदात्त [उच्च स्वरसे पढना] अनुदात्त [नीचे स्वरसे पढना] स्वरित [मध्यम स्वरसे पढना] इन तीनों घोषोंसे हीन पठन किया हो (सुट्ठुदिन्नं) अच्छा ज्ञान मूर्ख, अविनयी और कुपात्रको दिया हो (दुट्ठुपडिच्छियं) दुष्ट प्रकारसे अर्थात् अविनय भावसे ज्ञान सीखा हो (अकाले कओ सज्झाओ) अकालमें स्वाध्याय की हो (काले न कओ सज्झाओ) समय पर स्वाध्याय न की हो, (असज्झाइए

सज्झाय स्वाध्याय ... यीमें स्वाध्याय की हो और (सज्झाइए न सज्झायं) स्वाध्यायके अवसर हो, (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) तो उसमें लगे हुए अतिचार दोपसे मै पीछे हटता हूं॥

भावार्थ—अर्हन्तों, सिद्धो, आचार्यों, उपाध्यायों, साधुओं, साध्वियों, श्रावकों, श्राविकायों, देवों, देवियों, यावत् समस्त जीवोंकी आशातनासे मुनि निवृत्ति करे, क्योंकि आशातना करनेसे आत्मा महा कर्मोको बांधता है, अतः आशातना सर्वथा वर्जनेयोग्य है ॥

इसके पश्चात् मुनि निम्नलिखित सूत्रको पठन करे—

णमो चउवीसाय तित्थयराणं, उसभाइ महावीर, पज्जुवसाणाणं, इणमेवं निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तर केवलियं पडिपुन्नं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्ग अवित्तहं अविसंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहोणमग्गं इत्थठिया जीवा सिज्झंति, वुज्झंति, मुच्चंति, परिणिव्वायंति, सव्वदुक्खाणमंत्तं करंति ॥

हिंदी पदार्थ—(नमो चउवीसाय तित्थयराण) चतुर्विंशति [चौबीस] तीर्थंकर महाराजोंको नमस्कार हो (उसभाइ महावीर पज्जुवसाणाण) श्री ऋषभनाथजीसे लेकर श्री महा-

वीर पर्यंत अर्थात् चोवीस तीर्थकरोंको नमस्कार हो, (इणमेवं निग्गथ पावयणं) यह श्री अर्हतोंका प्रतिपादन किया हुआ जो निर्ग्रंथका मार्ग है अर्थात् जैन मत है, वह (सच) सत्य है (अणुत्तरं) प्रधान अर्थात् सर्वोत्तम है (केवलिय) अद्वितीय है (पडिपुन्नं) श्री अर्हन् भाषित वचनोमें किंचित् मात्र भी न्यूनता न होनेसे यह प्रतिपूर्ण है, (नेआउय) न्यायकारी है, (संसुद्धं) कलकरहित होनेसे महा शुद्ध है, (सल्लगत्तण) घोर संसारमें अनेक वार पर्यटन करानेवाले अथवा जीवोंको महा दुःख देनेवाले पदार्थको शल्य कहते है सो यह मार्ग ऐसे शल्यों काटनेवाला है (सिद्धिमग्गं) सिद्धि प्राप्त करनेका मार्ग है (मुत्तिमग्ग) मुक्ति अर्थात् निर्लोभका मार्ग है, (निज्जाणमग्ग) मोक्षका मार्ग है, (निव्वाणमग्ग) निर्वाण अर्थात् शान्तिका मार्ग है, (अवितहं) परम सत्य अथवा यथार्थ रूप है, (अविसंदिद्ध) संदेहसे रहित है, (सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं) सर्व दुःखोंको प्रक्षीण करनेवाला [नाश करनेवाला] है, (इत्थठिया जीवा) इस मार्गमें स्थित हुये जीव (सिज्झंति) सिद्ध होते है (बुज्झंति) सकल जीवोंके ज्ञाता [बुद्ध] होते है, (मुच्चंति) समस्त सांसारिक दुःखोंके देनवाले बन्धनोंसे मुक्त होते है, (परिणिव्वायंति) सर्वथा निवृत्तिभूत होते हैं, और (सव्वदुक्खाणमन्त करंति) सब प्रकारके शारीरिक अथवा मानसिक दुःखोका अन्त करते है अर्थात् सर्व दुःखोंसे रहित हो जाते हैं॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह विवर्ण है कि–मुनि चतुर्विंशति तीर्थंकरोंको नमस्कार करे, और श्री अर्हन्देवके प्रतिपादित धर्मपर दृढ़ विश्वास करे क्योंकि–यह सत्यरूप है, अनुत्तर अथवा अनुपम है, समस्त धरा धामपर अद्वितीय है, प्रतिपूर्ण, न्यायकारी, कलकरहित और दुःखदायक शल्योंको नाश करनेवाला है, अपितु सर्वज्ञों, सर्वदर्शियों तथा श्री तीर्थकरों द्वारा प्रतिपादन किया जाने अथवा सर्वथा यथार्थ होनेसे यह धर्म सिद्धि मुक्ति और निर्वाणके देनेवाला मार्ग है। पुनः सत्यरूप, संदेहरहित, और समस्त दुःखोको प्रक्षीण करनेका मार्ग है, अतः इसमे स्थित होकर (अर्थात् इसे धारण या ग्रहण करके) जीव सिद्ध, बुद्ध, और सब बन्धनोंसे मुक्त होते है तथा शीतलीभूत होकर सर्व प्रकारके शारीरिक और मानसिक दुःखोंसे रहित हो जाते है ॥

तं धम्मं सद्दहामि, पत्तियामि, रोयमि, फासेमि, पालेमि, अणुपालेमि, तं धम्मं सद्दहंत्तो, पत्तियंत्तो, रोयंत्तो, फासंत्तो, पालंत्तो, अणुपालंत्तो, तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अब्भुट्ठिउमि आराहणाय विरउमि विराहणाय ॥

हिंदी पदार्थ—(तं धम्म सद्दहामि) उस धर्मकी अर्थात् केवलिभाषित धर्मकी श्रद्धा करता हूं (पत्तियामि) प्रतीत करता हूं (रोयमि) रुचि करता हू (फासेमि) स्पर्श करता हूं

(पालेमि) इसे पालन करता हू तथा (अणुपालेमि) निरतर पालन करता हूं। पुनः (त धम्म सद्दहत्तो) उस धर्मकी अन्यको श्रद्धा करवाता हू (पत्तियत्तो) प्रतीत करवाता हू (रोयत्तो) रुचि करवाता हू (फासत्तो) स्पर्श करवाता हूं (पालंतो) पालन करवाता हूं तथा (अणुपालत्तो) निरतर पालन करवाता हूं। (तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अब्भुट्ठिडमि आराहणाय) उस धर्मकी [जो कि-केवलि भगवान्‌का प्रतिपादन किया हुआ है] आराधनाके लिये उपस्थित होता हू (विरउमि विराहणाय) और धर्मकी विराधनासे निवृत्ति करता हूं अर्थात् विराधनासे पीछे हटता हू ॥

भावार्थ—उस धर्मकी मै श्रद्धा करता हूं, प्रतीत करता हूं तथा औरोंसे श्रद्धा और प्रतीत करवाता हूं, अपितु धर्मकी विराधनासे उपरत होता हूं (निवृत्ति करता हूं) ॥

असंजम परियाणामि, संजमं उवसंपज्जामि १ अवंभं परियाणामि, वंभ उवसंपज्जामि २ अकप्पं परियाणामि, कप्पं उवसंपज्जामि ३ अन्नाण परियाणामि, न्नाणं उवसंपज्जामि ४ अकिरियं परियाणामि, किरियं उवसंपज्जामि ५ मिच्छत्तं परियाणामि, सम्मत्त उवसंपज्जामि ६ अबोहिं परिया-

णामि, वोहिं उवसंपज्जामि ७ अमग्गं परियाणामि, मग्गं उवसंपज्जामि ८ जं संभरामि, जं चन संभरामि, जं पडिक्कमामि, ज चन पडिक्कमामि, तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स पडिक्कमामि ॥

हिंदी पदार्थ—(असंजमं परियाणामि) असंयमके मार्गका परित्याग करता हूं, और (संजम उवसंपज्जामि) संयमको ग्रहण करता हूं, इसी प्रकार आगे भी अन्य पाठोंमें जानना चाहिये, क्योंकि "परियाणामि" शब्दका अर्थ "सर्वथा ज्ञात करके उसे त्याग करना" और "उवसंपज्जामि" शब्दका अर्थ "आसेवन या ग्रहण करता हूं" ऐसा है। (अबंभं परियाणामि बंभं उवसंपज्जामि) अब्रह्मचर्यको [कुशीलको] त्यागता हूं और ब्रह्मचर्यको धारण करता हूं। (अकप्पं परियाणामि, कप्प उवसंपज्जामि) अकल्पनीय पदार्थोंका त्याग करता हूं और कल्पनीयको ग्रहण करता हू, (अन्नाणं परियाणामि, न्नाणं उवसंपज्जामि) अज्ञान भावका परिहार करता हूं और ज्ञानको ग्रहण करता हूं (अकिरियं परियाणामि, किरियं उवसंपज्जामि) अक्रियावादको अर्थात् एकान्तवाद आदि क्रियारूपको छोड़ता हूं, तथा क्रियाभावको धारण करता हू। (मि-च्छत्त परियाणामि, सम्मत्त उवसंपज्जामि) मिथ्यात्वको छोड़ता हू और सम्यक्त्वको धारण

करता हूं (अबोहिं परियाणामि, बोहिं उवसंपज्जामि) अबोधिका परिहार करता हू और बोध ग्रहण करता हू (जं संभरामि, ज चन सभरामि) जो अतिचाररूप पाप मुझे याद आ गये हैं और जो याद नही आये (ज पडिक्कमामि, ज चन पडिक्कमामि) जिन अतिचारोंसे निवृत्ति कर चुका हूं, अथवा जिनसे पीछे नहीं हटा हूं (तस्स सव्वस्स देवासियस्स अइयारस्स पडिक्कमामि) इत्यादि दिनमें लगे हुये समस्त अतिचारोंसे मै पीछे हटता हू ॥

करता हूं अर्थात् सुमार्गको ग्रहण करता हूं जिसके द्वारा बोधबीजकी प्राप्ति हो उसे धारण करता हूं (अमग्ग परियाणामि, मग्ग उवसंपज्जामि) दुष्ट मार्गको छोड़ता हू और अर्हत् प्रणीत मार्गको

हिंदी पदार्थ—मुनिको चाहिये कि संयम अर्थात् साधु वृत्तिमें दिन सम्बन्धि यावत् भी दोष लगे हों उनकी आलोचना करे, और संयम, ब्रह्मचर्य, कल्पनीय वस्तु, ज्ञान, सम्यक् क्रिया, सम्यक्त्व, बोधिभाव, तथा सुमार्ग इनको ग्रहण करे, और इनके प्रतिपक्षियोंको अर्थात् अतिचारोको छोड़े। तथा इस प्रकार विचार करे—

समणोहं, संजय, विरय, पडिहय, पच्चक्खाय, पावकम्मे, अणियाणो, दिठ्ठिसंपन्नो, मायामोस विवज्जिउ, अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरस्स कम्म-

णामि, वोहिं उवसंपज्जामि ७ अमग्गं परियाणामि, मग्गं उवसंपज्जामि ८ जं सभरामि, जं चन संभरामि, जं पडिक्कमामि, जं चन पडिक्कमामि, तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स पडिक्कमामि ॥

हिंदी पदार्थ–(असंजमं परियाणामि) असंयमके मार्गका परित्याग करता हूं, और (संजम उवसंपज्जामि) संयमको ग्रहण करता हूं, इसी प्रकार आगे भी अन्य पाठोंमें जानना चाहिये, क्योंकि "परियाणामि" शब्दका अर्थ "सर्वथा ज्ञात करके उसे त्याग करना" और "उवसंपज्जामि" शब्दका अर्थ "आसेवन या ग्रहण करता हूं" ऐसा है। (अवंभं परियाणामि वंभं उवसंपज्जामि) अब्रह्मचर्यको [कुशीलको] त्यागता हूं और ब्रह्मचर्यको धारण करता हूं। (अकप्पं परियाणामि, कप्पं उवसंपज्जामि) अकल्पनीय पदार्थोंका त्याग करता हूं और कल्पनीयको ग्रहण करता हू, (अन्नाणं परियाणामि, न्नाणं उवसंपज्जामि) अज्ञान भावका परिहार करता हूं और ज्ञानको ग्रहण करता हूं (अकिरियं परियाणामि, किरियं उवसंपज्जामि) अक्रियावादको अर्थात् एकान्तवाद आदि क्रियारूपको छोडता हूं, तथा क्रियाभावको धारण करता हूं। (मि-च्छत्त परियाणामि, सम्मत्त उवसंपज्जामि) मिथ्यात्वको छोडता हूं और सम्यक्त्वको धारण

) अबाधका परिहार करता हूं और बोधि
करता हूं (अबोहिं परियाणामि, बोहिं उवसंपज्जामि) अबाधका परिहार करता हूं और बोधि
अर्थात् सुमार्गको ग्रहण करता हूं जिसके द्वारा बोधबीजकी प्राप्ति हो उसे धारण करता हू
(अमग्गं परियाणामि, मग्गं उवसंपज्जामि) दुष्ट मार्गको छोड़ता हू और अर्हत् प्रणीत मार्गको
ग्रहण करता हू (जं संभरामि, जं चन संभरामि) जो अतिचाररूप पाप मुझे याद आ गये है और
जो याद नहीं आये (ज पडिक्कमामि, ज चन पडिक्कमामि) जिन अतिचारोंसे निवृत्ति कर चुका
हू, अथवा जिनसे पीछे नहीं हटा हूं (तस्स सव्वस्स देवासियस्स अइयारस्स पडिक्कमामि) इत्यादि
दिनमें लगे हुये समस्त अतिचारोंसे मै पीछे हटता हूं ॥

हिंदी पदार्थ–मुनिको चाहिये कि संयम अर्थात् साधु वृत्तिमें दिन सम्बन्धि यावत् भी
दोष लगे हों उनकी आलोचना करे, और संयम, ब्रह्मचर्य, कल्पनीय वस्तु, ज्ञान, सम्यक् क्रिया,
सम्यक्त्व, बोधिभाव, तथा सुमार्ग इनको ग्रहण करे, और इनके प्रतिपक्षियोंको अर्थात् अतिचा-
रोंको छोड़े। तथा इस प्रकार विचार करे—

समणोहं, संजय, विरय, पडिहय, पच्चक्खाय, पावकम्मे, अणियाणो,
दिट्ठिसपन्नो, मायामोस विवज्जिउ, अड्ढाइजेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरस्स कम्म-

भूमीसु, जावंति केइ साहु रयहरणं गोच्छजं पडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अट्ठारस्त सीलंग सहस्सधारा अक्खयायार चरिता ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि। खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे, मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणई॥ एवमहं आलोइयं, निंदियं, गरहियं, दुगंच्छियं, सव्व तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिण चउवीसं॥

हिंदी पदार्थ–(समणोह) मैं श्रमण हूं (संजय) पाच इन्द्रियों तथा मन और आत्माको दमन करनेवाला हूं (विरय) संसारकी सर्व वासनाओंसे विरक्त हूं, (पडिहय) मैने दुष्ट कर्मोंको प्रतिहत किया है, (पचक्खाय पावकम्मे) मैने सब प्रकारके पाप कर्मका प्रत्याख्यान [नियम] किया है, तथा (अणियाणो दिट्ठिसंपन्नो) अपने किये हुए अखिल नियम व्रत आदिको किसी आशाके वशीभूत होकर वेच देनेको निदान कर्म कहते है सो मै निदान कर्मसें रहित तथा सम्यक् दृष्टि करके युक्त हूं, (अड्ढाइजेसु दीवसमुद्देसु) अढ़ाईस द्वीपों तथा समुद्रोमें या (पन्नरस्स कम्मभूमिसु, जावंति केइ साहु) पंचदश कर्मभूमियोंके क्षेत्रोंमें अर्थात् पाच भरत, च ऐरवरत तथा पाच महाविदेह आदिमें जितने साधु हैं (रयहरणं गोच्छगं पडिग्गहधारा) रजो-

हरण, गोच्छक, पात्रबंधन प्रमुख, पात्रके धरनेवाले, (पंचमहव्वय धारा) पांच महाव्रतोंको धारण करनेवाले (अट्ठारस्स सीलंग सहस्सधारा) अष्टादश शीलांग रथके धारक, (अक्खयायार चरित्ता) अक्षय आचार[चारित्र] के धरनेवाले (ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि) पूर्वोक्त समस्त गुणोंसे परिपूर्ण निखिल मुनियोंको मैं सिर करके तथा मन करके और मस्तक करके वन्दना करता हूं। (खामेमि सव्वे जीवा) मैं सब जीवोंसे क्षमापना करता हूं (सव्वे जीवा खमंतु मे) हे सर्व जीवो! तुम भी मेरेसे क्षमणभाव करो क्योंकि-(मित्ति मे सव्व भूएसु) मेरा सब जीवोंसे मैत्रीभाव है और(वेरं मज्झं न केणइ) मेरा वैरभाव किसीके साथ भी नहीं है (एवमहं आलोइयं) इस प्रकारसे मैंने ज्ञान, दर्शन, और चारित्रमें लगे हुये समस्त अतिचारोंकी आलोचना की है (निंदिय) उन दोषोंकी आत्माकी साक्षिमें निंदा तथा (गरहिय) उन दोषोंकी विशेष निंदा करता हूं (दुगंच्छिय) क्योंकि वह दोष दुर्गंच्छित है (सम्मं तिविहेणं पडिक्कतो) सब अतिचारोंको तीन करणोंसे छोडता हूं, और (वंदामि जिन चउवीसं) मैं रागद्वेषके जीतनेवाले चतुर्विंशति तीर्थंकरोंको नमस्कार करता हूं॥

भावार्थ—मुनिको चाहिये कि दिनमें लगे हुए समस्त अतिचारोंसे निवृत्ति करे, पुनः अर्द्ध तृतीय द्वीपों तथा पंचदश कर्मभूमिमें रहनेवाले मुनियोंको नमस्कार करे, तथा सर्व जीवोंसे

क्षमाभाव करे अर्थात् किसी प्राणीसे भी द्वेप भाव न करे और पश्चात् श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर देवो [जिनेश्वरों] को नमस्कार करे क्योंकि इस प्रकार स्तव करनेसे आत्मा अनंत कर्मोंकी वर्गणासे विमुक्त हो जाता है ॥

फिर दो वार "इच्छामि खमासमणो" का पाठ पढकर यथाविधि पाच पदोंकी स्तुति वा वदना करके फिर तिक्खुत्तोके पाठसे गुरुमहाराजको वदना करके निम्नलिखित पाठ खड़ा होकर पढे !

अनंत चौवीसीते नमो, सिद्ध अनंता कोड, केवलज्ञानी स्थविर सभी, वांदु वे कर जोड १ दो कोडी केवलधरा, वीहरमान जिन वीस, सहस्र युगल कोडो नमो, साधु वदु निसदोस २ साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकायें, चार गति चौवीस दंडक चौरासी लाख जीवा योनि साथ मैं खमाउ वार २ तथा म्हारे जीवे कोई जीवनी विराधना करी कराई हो करतां प्रति अनुमोद्या हो

१ इसका विशेप अर्थ प्रथम भागमें लिखा जा चुका है ॥

और एक २ जीवके साथ १८ लाख २४ हजार एक सौ वीस मिच्छा मि दुक्कड। खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमतु मे, मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ १ इमं आलोइयं निंदिय गरहिय दुगंछियं सव्वं, तिविहेण वंदामि जिण चउवीसं ॥

फिर गुरुमहाराजको तिक्खुत्तोके पाठसे विधिपूर्वक वंदना करके पॉचवे आवश्यक करनेकी आज्ञा लेकर निम्नलिखित सूत्र पठन करे ॥

आवस्सही इच्छाकारेण सदिसह भगवन् देवसी प्रायश्चित विशोधनार्थ करेमि काउसग्गं ॥

हिंदी अर्थ—अवश्यही करनेयोग्य जो दिवस सम्बन्धि पाप है उनकी विशुद्धिके लिए मै कायोत्सर्ग करता हू। फिर "नवकार मत्र पढे", फिर "करेमि भंतेका" पाठ पढे, फिर "इच्छामि ठामिका पाठ पढे" फिर तस्सउत्तरीका पाठ पढ़कर ध्यान करे, अपितु ध्यानमें देवसिको ४ लोगस्स, रात्रीको २ शेप तपविचार, पक्षिका १२, चतुर्मासीको २०, सम्वत्सरीको ४० पढ़े

और चातुर्मासी और सम्वत्सरीको दो प्रतिक्रमण करे; फिर ध्यान पार कर एक लोगस्स उज्जो-यगरेका पाठ पढ़ कर दो वार पूर्वोक्त विधि अनुसार इच्छामि खमासमणोका सूत्र पढ़े । फिर तिक्खुत्तोके पाठको पढ़कर छठा प्रत्याख्यान आवश्यककी आज्ञा लेकर यथाशक्ति प्रत्याख्यान करे ॥

॥ अथ छठा आवश्यक विषय ॥

यदि गुरुजी हों तो उन्होसे प्रत्याख्यान करा लेवे, नहीतो यथाशक्ति तप आपही ग्रहण करे ॥

अथ छठे आवश्यकका पाठ ॥

नमस्कारपूर्वक मुहूर्त्तके प्रत्याख्यानका मूल सूत्र ॥

उग्गयसूरे नमुक्कार सहियं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहस्सागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे महूर्त प्रमाण (नमुक्कार सहियं) नमस्कारसहित अर्थात् नमोक्कारके पढे विना पारणा नही करना (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू (चउ-

विहपि आहारं) चतुर्विधके आहारका जैसेकि-(असणं) अन्नकी जाति (पाण) पानीकी जाति (खाइम) फलादिकी जाति (साइम) चूर्णादिकी जाति, किन्तु ये निम्नलिखित आगार हैं जैसेकि-(अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग [विस्मृति होनेसे] वस्तु खानेपर आ जाने भक्षण करते समय प्रत्याख्यनकी स्मृति न रहे तथा (सहस्सागारेण) अकस्मात् कोई वस्तु मुखमें जा पडे जैसे दधिको मथन करते हुए [तक्र-छाछ] कोई बूंद मुखमें जा पड़ता है, सो यह दो आगारपूर्वक चार प्रकारके आहारको (वोसिरामि) छोड़ता हूं, क्योंकि इन आगारोंसे प्रत्याख्यान भंग नहीं होता ॥

भावार्थ-उक्त पाठ मुहूर्त मात्रके प्रत्याख्यान करनेका है। यदि प्रत्याख्यान स्वयं करना हो तब तो (पच्चक्खामि) और (वोसिरामि) ऐसे शब्द कहे, यदि गुरु करवावे तब (पच्चक्खाइ) और (वोसिरइ) ऐसे कहे। इस प्रत्याख्यानमें दो आगार होते हैं जेसेकि-(अन्नत्थणाभोगेणं) विना उपयोग (सहस्सागारेणं) और अकस्मात्, इन आगारोंसे प्रत्याख्यान अभंग होता है। ईसी प्रकार सर्व प्रत्याख्यानोंमें जानना चाहियें और चतुर्विधके आहारका सर्वथा ही इस नियममें प्रत्याख्यान है ॥

अथ द्वितीय प्रत्याख्यान एक प्रहर वा सार्द्ध पौरुषीका ॥

उग्गयसूरे पोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥ एवं साड्ढ पोरिसियं पच्चक्खामि—जाव वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे पोरिसिं पच्चक्खामि) उदय होने पर सूर्यके प्रहर [एक यामका] प्रत्याख्यान करता हूं (चउव्विहंपि) चतुर्विधके (आहार) आहारका जैसेकि—(असणं) अन्नकी जाति (पाणं) पानीकी जाति (खाइमं) खादिमकी जाति (साइमं) सादिमकी जाति, निम्नलिखित आगारपूर्वक जैसेकि—(अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग (सहसागारणं) अकस्मात्—विना इच्छा (पच्छन्नकालेणं) मेघादिके होने पर सूर्य प्रच्छन्न हो गया हो जैसे सतत वर्षाके होने पर सूर्य दिखाई न देता हो तब पारणा कर लेनेसे प्रत्याख्यान भंग नहीं होता । (दिसामोहेणं) दिशाके मूढ होने पर जैसेकि पूर्वको पश्चिम ज्ञात कर लिया पश्चिमको पूर्व ज्ञात किया तब खाया गया तो प्रत्याख्यान अभंग है (साहुवयणेणं) साधुके कहनेपर (सव्वसमाहिवत्ति आ-

गारेण) प्रत्याख्यान सर्व प्रकारकी शारीरिक समाधि होनेपर ही हैं। इन आगारों सहित मैं चारों प्रकारके आहारको (वोसिरामि) छोडता हू ॥ इसी प्रकार सार्द्ध पौरुषीका पाठ जान लेना ॥

भावार्थ—एक यामका प्रत्याख्यान करना हो वा सार्द्ध पौरुषीका नियम करना हो तो पूर्वोक्त पाठ पढे ॥

अथ तृतीय पुरिमड्ढ (दो याम) का प्रत्याख्यान ॥

उग्गयसूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि) सूर्यके उदय होनेपर दो प्रहरका प्रत्याख्यान करता हूं (चउविहंपि आहारं) चतुर्विधके आहारका जैसेकि—(असण पाणं खाइमं साइमं) अन्नकी और पानीकी जाति खादिमकी जाति सादिमकी जाति (अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग भक्षण की जावे (सहसागारेण) अकस्मात् ग्रहण की जावे (पच्छन्नकालेणं) सूर्यके प्रच्छन्न होनेपर (दिसामोहेण) दिग्मूढ होने पर [दिशा भूलनेपर] (साहुवयणेणं) साधुके कथन

करने पर (महत्तरागारेणं) महान् कार्यकी अपेक्षा, जैसे किसी मुनिके पुरिमड्ढका प्रत्याख्यान किया हुआ है, कारणविशेष होनेपर गुरुकी आज्ञासे प्रथम भी पारणा कर सक्ता है, जैसे चातुर्मासमें साधुने अमुक ग्राम वा नगरमें अमुक साधुकी वैयावृत्य [सेवा] वास्ते जाना है वे पुरिमड्ढकी अपेक्षा महान् कर्मोंकी निर्जरा है इत्यर्थः। (सवसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधि होने पर (वोसिरामि) इन आगारों प्रयुक्त मै चतुर्विधिके आहार को छोड़ता हू ॥

भावार्थ—पुरिमड्ढके प्रत्याख्यानमें चतुर्विधि आहारके प्रत्याख्यानके अन्य अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं यह आगार होते है ॥

अथ विगइ निविगइ प्रत्याख्यानका पाठ ॥

विगइओ निविगइओ पच्चक्खामि, अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ संसट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेण वोसिरामि॥ १ ॥

हिंदी पदार्थ—(विगइओ निविगइओ) विगइ जो आत्माको विकृति भाव करनेवाले है, जै-

सेकि–दुग्ध, दधि, घृत, नवनीत, गुड, तैल इत्यादिके प्रत्याख्यानको निर्विगइ कहते हैं, सो निर्विगइका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं तथा वर्तमानकालमें उक्त प्रत्याख्यानका अनुप्रधान छाछ द्वारा किया जाता है; छाछमें रोटी डालकर आसेवन करनेकी प्रथा वर्त्तमानकालमें है। उक्त प्रत्याख्यानमें आगारोंकी सख्या लिखते हैं यथा–(अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग (सहसागारेणं) अकस्मात् (लेवालेवेण गिहत्थ ससट्ठेणं) तथा भाजनादि गृहस्थके विगयसे स्पर्शित हों अर्थात् भाजनादि विगयसे सयुत हों (उक्खित्त विवेगेणं) मंडेके ऊपरसे विगय दूर किया हो तथा (पडुच्चमक्खीएणं) मंडेको घृतादिका स्पर्श हुआ हो [चोपडे हुए हों] (पारिठावणियागारेण) अधिक होनेपर जैसेकि अपराह्णकालमें कारणवशात् भोजन अधिक आ गया परंतु साधु नहीं रख सकता इसलिए उस आहारका भी आगार होता है (महत्तरागारेण) महान् निर्जराकी अपेक्षा (सव्वसमाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके होनेपर (वोसिरामि) इस प्रकारसे विगयको छोडता हू ॥

भावार्थ–विगयके प्रत्याख्यानमें पूर्वोक्त आगार होते हैं ॥

अथ विगयका एकासनयुक्त प्रत्याख्यानका पाठ ॥

उग्गयसूरे निविगइ एकासणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं

साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ संसट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे निविगइ पच्चक्खामि) सूर्य उदयसे निविकृतिभावको ग्रहण करके विकृति भावका प्रत्याख्यान करता हूं, फिर (एकासणं) एक आसनपर अन्नादि भक्षण करके, पुनः (तिविहंपि) त्रिविधके (आहारं) आहारका भी प्रत्याख्यान करता हूं जैसेकि–(असण) अन्नकी जाति (खाइमं) खादिमकी जाति (साइमं) सादिमकी जाति (अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग (सहसागारेण) अकस्मात् (लेवालेवेणं) लेपालेपका (गिहत्थ संसट्ठेण) गृहस्थके संसृत हाथोंसे (उक्खित्त विवेगेण) विगयको मंडेके ऊपरसे उठानेपर (पडुच्चमक्खिएण) मंडेको चोपड़नेसे (पारिठावणियागारेण) भोजनके अधिक होने पर (महत्तरागारेणं) महान् कार्यकी अपेक्षासे (सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधि होनेपर (वोसिरामि) तीन आहारका प्रत्याख्यान करता हूं ॥

भावार्थ—एकासनयुक्त तीन आहारका निविगइमें प्रत्याख्यान करे किन्तु पानी प्रासुक

ही आसेवन करे, आगार सर्व पूर्ववत् ही हैं। इसमें विशेष विगयोंका ही प्रत्याख्यान है, किन्तु वर्त्तमानकालमें छाछके साथ इस नियमको पाला जाता हैं। इसी प्रकार स्कधविगय वा धारविगयोंके प्रत्याख्यानका विवेक होना चाहिये ॥

अथ एकासन द्विआसन करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे एगासणं वियासणं पच्चक्खामि दुविह तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअम्भुट्ठाणेणं पारिठावणियागारेण महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥ ६ ॥

हिंदी पदार्थ–(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (एगासण) एकासन वा (वियासणं) दो आसन–एक वार भोजन करनेको एकासन और द्विवार भोजन करनेको दोआसन कहते हैं। उनके उपरान्त (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं (दुविह) यदि पानी और खादिम ग्रहण करने होवें तो अशन और खादिमका प्रत्याख्यान करे, यदि एकासनके पीछे केवल प्रासुक पानी ही ग्रहण करना होवे तो (तिविहंपि) तीन प्रकारके आहारका प्रत्याख्यान करे, जैसेकि–

(असणं) अन्नकी जाति (खाइमं) खादिमकी जाति (साइमं) सादिमकी जाति, किन्तु निम्न-लिखित आगारानुकूल जैसेकि-(अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग (सहसागारेण) अकस्मात् (सागारिआगारेण) गृहस्थके आनेपर जैसेकि कोई साधु आहार करता होवे, किसी गृहस्थके आने पर उठकर अन्यत्र कहीं चले जानेसे प्रत्याख्यान भंग नहीं होता (आउट्टणपसारेणं) शरीरके संकोचन [सुकड़ने] और पसारने पर क्योंकि यदि एकासनमें अंगोपांग संकोचन और प्रसारन किया जाए तो प्रत्याख्यान भंग न होगा (गुरु अब्भुट्ठाणेणं) गुरुके आनेपर यदि विनयके वास्ते उठना पड़े (पारिठावणियागारेणं) अधिक भोजनके आनेपर (महत्तरागारेणं) महान् कार्यकी अपेक्षा (सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधिके रहनेपर (वोसिरामि) उक्त आगारों युक्त तीन आहारको छोड़ता हूं ॥

भावार्थ—एकासन वा द्विआसनमें द्विविध वा त्रिविधिके आहारका प्रत्याख्यान करे ॥

अथ एकलठाण करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे एगलठाणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं

... सहसागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं

पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि॥७॥

हिंदी पदार्थ–(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (एगलठाणं,) एक स्थानके विना अन्य स्थानपर गमन करके आहार करनेका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं (तिविहंपि) त्रिविधिके आहारका जैसेकि–(असणं) अन्नकी जातिका (खाइमं) खादिमकी जातिका (साइमं) सादिमकी जातिका किन्तु (अन्नत्थणा भोगेण) इतना विशेष है कि विना उपयोग आहारादि आसेवन किया जाए (सहसागारेण) अकस्मात् (सागारिआगारेण) गृहस्थके आनेपर (गुरुअभुट्ठाणेण) गुरुकी विनयके लिए खड़ा होनेपर (पारिठावणियागारेणं) अधिक भोजन होनेपर (महत्तरागारेणं) महान् कार्यकी अपेक्षा (सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधि रहनेपर (वोसिरामि) तीनों आहारोंको छोडता हू ॥

भावार्थ–सकल स्थानका प्रत्याख्यान एकासनके तुल्य ही है, किन्तु विशेष इतना ही है कि एकासनमें अंगोपांगके संकोचने पसारनेका त्याग नहीं है। एकलस्थानमे अंगोपांगके संकोचने और पसारनेका भी परित्याग होता है ॥

अथ आंबिल करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे आंबिलं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं

अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ संसट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं पाणस्स लेवेणवा अलेवेणवा अच्छेणवा बहुलेवेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरामि ॥ ८ ॥

हिंदी पदार्थ–(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (आविलं) आचम्ल अर्थात् अम्लरसका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं (तिविहंपि) त्रिविधिके (आहारं) आहारका जैसेकि– (असणं) अन्नकी जाति (खाइमं) खादिमकी जाति (साइमं) सादिमकी जाति (अन्नत्थणा-भोगेण) अपितु विना उपयोग ग्रहण की जाए (सहसागारेण) अकस्मात् वस्तु ग्रहण की जाए (लेवालेवेण) हस्तादि विगय करके संयुक्त होवें अथवा भली प्रकारसे हस्तादिको पूछ लिया फिर उन्हीं हाथोसे आहार लिया जावे उसको आलेप कहते हैं (गिहत्थ संसट्ठेणं) गृहस्थके हस्त वा भाजन विगयादि करके समृत होवें तथा (उक्खित्त विवेगेण) स्थूल विगय पूपादिसे भिन्न कर दी जाए फिर वे मंडे ग्रहण किये जावें (पारिठावणियागारेण) अधिक आहारके आनेपर यदि वे आहार परिष्ठापन करना हो, फिर उसको आचम्लवाला ग्रहण कर लेवे तो दोष नहीं

है (महत्तरागारेणं) महान् निर्जराकी अपेक्षा (सव्वसमाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके होनेपर (पाणस्स) पानीकी अपेक्षा इतने प्रकारके जल ले, भिन्न अन्य पानीका नियम जेसेकि-(लेवेण) लेपयुक्त पानी जैसे खर्जूरादिका (वा) अथवा (अलेवेण) अलेप जल जैसे धोवनका पानी (वा) अथवा (अच्छेण) शुद्ध निर्मल पानी (वा) अथवा (बहुलेवेण) बहु लेपयुक्त जैसे ताण्डुलका धोवन (वा) अथवा (ससित्थेण) सीत्थयुक्त [कणसहित] जैसे चून्नका धोवन (असित्थेणवा) सीथरहित जल जैसे प्राशुक जल, इनके विना अन्य प्रकारके जलोको (वोसिरामि) छोडता हूं ॥

भावार्थ—आंबिल उसको कहते है जो विगयादिसे रहित केवल प्राशुक जलके साथ ही मडे ग्रहण किए जावें उसका ही नाम आंबिल है, किन्तु आगार पूर्ववत् ही है। केवल पानी षट् प्रकारसे वर्णन किया गया है जैसेकि—लेपयुक्त १ अलेपयुक्त २ शुद्ध उष्ण पानी ३ बहुलेपयुक्त ४ सीथयुक्त ५ असीथयुक्त ६ इनके विना अन्य जलका परित्याग करे ॥

अथ चउविहार उपवासका पाठ ॥

उग्गयसूरे अभ्भत्तठ पच्चक्खामि चउविहंपि आहारं असणं पाणं खा-

इमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ-(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (अब्भत्तठ) अभक्तार्थ अर्थात् अन्न पानीके न ग्रहण करनेके वास्ते (चउव्विहंपि आहार) चार प्रकारके आहारका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं जैसेकि-(असणं) अन्नकी जाति (पाण) पानीकी जाति (खाइमं) खादिमकी जाति (साइम) सादिमकी जाति किन्तु (अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग आहार ग्रहण किया जावे (सहसागारेणं) अकस्मात् ग्रहण किया जाए (पारिठावणियागारेण) अधिक आहारके होनेपर (महत्तरागारेण) महान् निर्जराकी अपेक्षा (सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधि होने पर (वोसिरामि) चार प्रकारके आहारको त्यागता हूं ॥

भावार्थ-चतुर्विधके आहारके प्रत्याख्यानमें पूर्वोक्त आगार रक्खे जाते है इसको चउविहार व्रत भी कहते हैं ॥

अथ तिविहार उपवास करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे अब्भत्तठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं

साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं पाणाहार पोरिसिं पच्चक्खामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेण पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्ति आगारेण पाणस्स लेवेणवा अलेवेणवा अच्छेणवा बहुलेवे-णवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ–(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (अभत्तट्ठं) अभक्तार्थ अर्थात् उपवास करनेके वास्ते (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं (तिविहंपि आहार) त्रिविधिके आहारका प्रत्याख्यान करता हूं जैसेकि–(असण) अन्नकी जाति (खाइम) खादिमकी जाति (साइमं) स्वादिमकी जाति किन्तु निम्नलिखित आगार इसमें भी है जैसेकि–(अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग कोई वस्तु आसेवन की जाए वा (सहसागारेणं) अकस्मात् ग्रहण की जाए तथा (पारिठावणियागारेण) अधिक भोजन होने पर (महत्तरागारेणं) महा निर्जरा जानकर (सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधिके होने पर और तिविहार उपवासमें पानीका त्याग नहीं है, यदि किसीने पानीका त्याग प्रहर वा द्वि प्रहर इत्यादिका कर दिया हो तो उसके

लिये भी निम्न प्रकारसे आगार होते है-यथा-(पाणाहार पोरिसिं) पानीके आहारका प्रहर पर्यन्त वा द्वि प्रहर पर्यन्त (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं-तो निम्नलिखित आगार पानीके त्यागमें होते है, जैसेकि-(अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग पानी पीया गया (सहसागारेणं) अकस्मात् पानीका विंदु मुखमें चला गया (पच्छन्नकालेण) कालके प्रच्छन्न होने पर जैसेकि वादलादिमें दिनकी भ्रान्ति पड़ जाती है (दिसामोहेणं) दिग्मूढ होने पर [दिशा भूलने पर] (साहुवयणेण) साधुके कहने पर (महत्तरागारेणं) महान् निर्जरा जानकर (सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधि रहने पर फिर (पाणस्स) पानी षट् प्रकारसे ग्रहण करे जैसे कि-(लेवेण) लेपयुक्त पानी जैसे खर्जूरका (वा) अथवा (अलेवेण) लेपसे रहित पानी जैसेकि धोवनका पानी (वा) अथवा (अच्छेण) शुद्ध उष्ण पानी (वहूलेवेण) वहु लेपयुक्त जैसे चावलोंका धोवन (वा) अथवा (ससित्थेण) जैसेकि-चूनका धोवन (वा) अथवा (असित्थेण) प्राशुक जल (वोसिरामि) इनके विना और पानीका त्याग करता हूं ॥

भावार्थ-तिविहार उपवासमें केवल जलका त्याग नहीं होता है सो जलके त्यागका विवर्ण मूल अर्थमें दिखलाया गया है । आगार सर्व पूर्ववत् ही है ॥

रात्रि चउविहार तथा भवचरमका प्रत्याख्यान करनेका पाठ ॥

दिवसचरिमं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(दिवसचरिमं) दिन चरम उसको कहते हैं जो दिनके साथ ही चार आहारका प्रत्याख्यान किया जाए यावत् काल सूर्य उदय न हो तब तक चार आहारका त्याग ही रहे, परंतु जब संस्तारक [अनशन] करना हो तब भवचरम कहा जाता है सो दिवस चरम में चार प्रकारके आहारका त्याग होता है जैसेकि—(पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं (चउविहंपि) चतुर्विधके (आहारं) आहारका (असणं) अन्नका (पाणं) पानीका (खाइमं) खादिमका (साइमं) स्वादिमका, किन्तु निम्नलिखित आगार इसमें भी हैं जैसेकि—(अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग वस्तु ग्रहण की जाये वा (सहसागारेणं) अकस्मात् वस्तु ग्रहण की जाये वा (महत्तरागारेणं) महान् निर्जराके वास्ते अथवा (सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधिके रहनेपर (वोसिरामि) उक्त आगारों युक्त मैं चतुर्विधके आहारको छोड़ता हूं॥

भावार्थ—दिवस चरम अथवा भवचरममें चतुर्विधिके आहारका प्रत्याख्यान किया जाता है जिसमें चार आगार होते है जैसेकि अन्नत्थणा भोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्ति आगारेण, इनका अर्थ पूर्ववत् ही जान लेना ॥

अथ गंठिसह मुठिसह अभिग्रहके करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे गंठिसहियं मुठिसहियं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (गंठिसहियं मुठिसहियं) ग्रंथि सहित वा मुष्टि सहित (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू (चउव्विहंपि) चतुर्विधके (आहारं) आहारका जैसेकि—(असणं) अन्नकी जाति (पाणं) पानीकी जाति (खाइम) खादिमकी जाति (साइमं) स्वादिमकी जाति (अन्नत्थणा भोगेणं) अपितु विना उपयोग वस्तु ग्रहण की जाये (सहसागारेणं) अकस्मात् ग्रहण की जाये (महत्तरागारेणं) महान् निर्जराके वास्ते (सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधिके होने पर (वोसिरामि) आहारको छोड़ता हू ॥

भावार्थ—दोरादिकी गठिका अभिग्रह वा मुष्टिवधादिका अभिग्रह करे जैसेकि यावत् काल गाठ न खोलूंगा तावत्काल पर्यन्त चतुर्विधिके आहारका परित्याग करता हूं; इसी प्रकार मुष्टि आदिकी भी सभावना कर लेनी ॥

अथ चतुर्दश नियम करनेवालोंको दिशावकाशिक अभिग्रह करनेका पाठ ॥

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(देसावगासिअ) देशावकाशिक व्रतका प्रमाण करना हो तथा (उवभोग) जो एक वार भोगनेमें आवे तथा (परिभोगं) जो पुनः पुनः आसेवन करनेमें आवे (पच्चक्खामि) उन पदार्थोंका प्रत्याख्यान करता हू किन्तु इतना विशेष है कि (अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग ग्रहण की जाये वा (सहसागारेण) अकस्मात् ग्रहण की जाये तथा (महत्तरागारेणं) महान् निर्जरा जानकर वे वस्तु आसेवन की जायें (वोसिरामि) इन आगारोंके साथ त्याग करता हूं ॥

भावार्थ—नित्यम् प्रति देशावकाशिक व्रत धारण करना हो वा उपभोग परिभोगका परिमाण करना हावे तो पूर्वोक्त आगारोंके साथ करना चाहिये जिस करके व्रतमें किसी प्रकारसे भी दोष न लगे और चतुर्दश नियम गृहस्थोंको अवश्य ही ग्रहण करने चाहियें क्योंकि यह उक्त पाठ गृहस्थ सम्बन्धी है ॥

॥ इति श्री प्रत्याख्यान सूत्र हिंदी पदार्थयुक्त सम्पूर्णम् ॥

॥ इति श्री षड़ावश्यक सूत्र सम्पूर्णम् ॥

गुर्वावलि ॥ प्राकृत काव्यम् ॥

अणुत्तरे सहस्स गुणेहि जुत्तो, सायरो वरवंति दीहदसी अहियं ।
नाहस्स सण्णा सिरि मोत्तारामं, आयरिय आसी विसालकित्तो ॥ १ ॥

तस्सतेवासी पुण्णपुज्जस्सामी, कुम्म इव दंतो ससीव सोमो ।
थेरे मुणि गणवइय नामं, गणावच्छेइए जिन संघ हिएसी ॥ २ ॥

तस्स सीस्सेय महाणुभावो, गुरुभत्तिकारय पण्णाल धीरो ।
विक्खायकित्तो जयराम नामं, रत्तोव्वएसुसयाऽप्पमत्तो ॥ ३ ॥

तस्स दिक्खिओ इंगियागारमंतो, सुहुमनाणेसु अत्थि विसारय ।
नामत्थि जेस्सिं सिरि सालिग्गामं, तेस्सिं प्पसाएण लिहियो च ग्गंथं ॥४॥

गिहीव्वया दप्पणय सतिकत्ता, आवस्सय सुय अघतिमिरहत्ता ।
निच्च किच्च वोहा वीरेण पण्णत्ता, चरित्तदाता मुक्खमग्गनेत्ता ॥ ५ ॥

इम्मस्स सुयस्स हिंदी पयत्थ, तहेव भावट्ठ सुयम विसुद्धं ।
लिहियं च अट्ठ गुरु प्पसाओ, उवज्झाय आयारामेण मया ॥ ६ ॥

इति श्री आवश्यक सूत्र-भाग २ रा

(साधु प्रतिक्रमण) संपूर्ण ॥